Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

जिम कोइ घ्रत तंबाखू विणजे,
पिण वासण विगत न पाडे।
घ्रत लेई तंबाखू में घाले,
ते दोनूंई वसत बिगाड़े।।

जैसे कोई घी और तंबाकू का व्यापार करता है, पर उनका बर्तन अलग-अलग नहीं रखता। घी को तंबाकू के पात्र में डालता है। इस प्रकार वह घी और तंबाकू दोनों वस्तुओं को बिगाड़ देता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 26 • 31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-03-2025 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

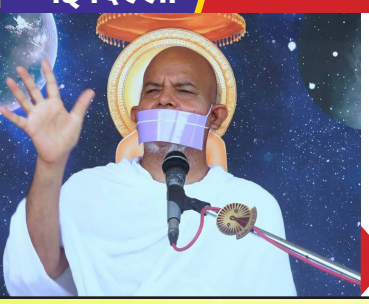

किए गए कर्मों के फल से बचना है असंभव : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

बहुश्रुत की उपासना से बदल सकती है जीवन की दशा और दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

स्वयं एवं दूसरों को बनायें अहिंसा पथ का पथिक : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
24 मार्च, 2025

तीर्थंकरों के प्रतिनिधि, शांति के स्रोत आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12 किमी का विहार कर खारोई ग्रुप प्राथमिकशाला में पधारे। शांतिदूत ने फरमाया कि व्यक्ति के भीतर निष्ठुरता और आक्रोशशीलता हो सकती है, तो करुणा और क्षमाशीलता भी हो सकती है। दया, अनुकम्पा और मैत्री — ये अहिंसा के परिवार के सदस्य हैं। जिस व्यक्ति में दया-अनुकम्पा की भावना होती है, वह हिंसा के पाप से संभवतः बच सकता है और अन्य पापों से भी बच सकता है।

एक लोकोत्तर दया-अनुकम्पा होती है और दूसरी लौकिक दया। जहाँ आत्मा की रक्षा की बात आती है, वहाँ पाप कर्मों से आत्मा को रक्षित रखना लोकोत्तर दया है; और शरीर की रक्षा करना लौकिक दया कहलाती है। बाह्य संदर्भ में दया लौकिक होती है, जबकि आंतरिक व आध्यात्मिक संदर्भ में वह लोकोत्तर बन जाती है। साधु प्रवचन दे रहे हैं, यह लोकोत्तर दया है। वहीं, गरीब की सहायता करना लौकिक उपकार है। दान भी दो प्रकार का होता है — लोकोत्तर दान और लौकिक दान। संयमी साधु को विशुद्ध दान देना, सम्यक् ज्ञान देना, अभयदान देना — ये सब लोकोत्तर दान हैं।

उपकार, दया और दान — इन कार्यों को हम लौकिक और लोकोत्तर रूप में देख सकते हैं। जो कार्य आत्मा के कल्याण से जुड़े होते हैं, वे सभी लोकोत्तर माने जाते हैं, जबकि बाह्य सहयोग लौकिक माना जाता है। यदि चित्त, वित्त और पात्र शुद्ध हो तो वह धर्म-दान कहलाता है। लौकिक दान से मित्रता बढ़ सकती है, शत्रुता कम हो सकती है; मान-सम्मान बढ़ाकर समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

साधु दया के अधिकारी होते हैं, क्योंकि वे अहिंसा की मूर्ति होते हैं। वे जीवों की हिंसा से स्वयं को बचाते हैं। ऐसे साधु के दर्शन मात्र से ही कर्मों की निर्जरा होती है।

गृहस्थ भी जितना संभव हो, अनावश्यक हिंसा से बचे। गृहस्थ जीवन में भी हिंसा होती है, जैसे चूल्हा जलाने से, चक्की/शिला से, झाड़ू से, ऊंखली-मूसल से और पानी भरने के स्थान से। यदि गृहस्थ इन कार्यों में सावधानी बरतें तो हिंसा का अल्पीकरण संभव है। (शेष पेज 10 पर)

स्वयं सत्य खोजे, सब के साथ मैत्री करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भचाऊ।
22 मार्च, 2025

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी का कच्छ यात्रा में दुबारा भचाऊ पधारना हुआ। यहाँ के स्वामी नारायण गुरुकुल में अमृत देशना प्रदान कराते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि सूत्र में दो बातें बताई गयी हैं- स्वयं सत्य की खोज करें और प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखें। दूसरे ने खोज लिया और हमें बता दिया यह एक बात है पर उस बात की यथार्थता का स्वयं अन्वेषण करें। जो स्वयं सत्य का साक्षात्कार कर लेते हैं वे केवलज्ञानी बन जाते हैं।

तीर्थंकर तो सर्वज्ञ-केवलज्ञानी होते हैं। उनको यह कहने की संभवतः अपेक्षा नहीं है कि 'उन्होंने ऐसा कहा था', वह कहते हैं - "मैं यह बता रहा हूं"। सर्वज्ञ को दूसरे का सहारा लेने की संभवतः अपेक्षा नहीं होती। क्योंकि उन्होंने स्वयं सत्य की खोज करली। हम सामान्य व्यवहार में भी स्वयं यथार्थ को समझने का, स्वयं ज्ञान करने का प्रयास करें। खुद का ज्ञान खुद का होता है। दूसरों के भरोसे रहने वाला संकट में पड़ सकता है।

किसी प्राणी के प्राणों का बिना मतलब हंतव्य न करें। सब प्राणियों के प्रति मैत्री रखें। साधु तो अहिंसा के प्रति पूर्णतया जागरूकता रखें, देख-देखकर चलें। गृहस्थ भी फालतू हिंसा से बचे। मनुष्य और तिर्यंच प्राणियों से भी मैत्री रखें। मैत्री और सच्चाई की आराधना से आत्मा अच्छी रह सकती है।

पूज्यवर के स्वागत में स्वामीनारायण गुरूकुल के शास्त्री कृष्णादास स्वामी, ट्रस्टी एवं भाजपा नेता वागजी भाई अहीर, जिला पंचायत प्रमुख कनकसिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

समता से उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता है स्थायी : आचार्यश्री महाश्रमण

पडाना।
20 मार्च, 2025

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी गांधीधाम के पंद्रह दिवसीय प्रवास के समापन के पश्चात शहर के बाहरी क्षेत्र में स्थित पाइन इंडिया परिसर में पधारे।मंगल प्रवचन में आचार्यप्रवर ने कहा कि जैन दर्शन, जैनिज्म और जैन धर्म ऐसे सिद्धांतों पर आधारित हैं जहाँ नौ तत्वों, अहिंसा और विशेष रूप से समता की चर्चा होती है। अध्यात्म की साधना का कोई प्रमुख आधार है, तो वह समता की साधना ही है। परिस्थितिजन्य खुशी क्षणिक होती है, जो कभी भी समाप्त हो सकती है, किंतु जो प्रसन्नता परिस्थिति-निरपेक्ष, आत्मा और समता से उत्पन्न होने वाली है, वही स्थायी सुख का कारण बनती है। समता हमारे नियंत्रण में होती है, जबकि परिस्थितियाँ हमारे वश में नहीं होतीं। जो स्ववश है, वही सुख का आधार है, और जो परवश है, वह दुःख का कारण बनता है।

आचार्य प्रवर ने उदाहरण देते हुए कहा कि हमें भारुंड पक्षी की तरह सजग और अप्रमत्त रहना चाहिए। जीवन में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव—इन सभी का विचार आवश्यक है। शरीर की सक्षमता भी एक प्रकार का सुख है। हमारे दो हाथ और दो पैर हमारे सेवक हैं, जिनका हमें उत्तम उपयोग करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी परावलंबी नहीं बनना चाहिए। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, हमें उसमें समता का भाव बनाए रखना चाहिए।

आचार्यश्री ने समझाया कि अध्यात्म की साधना में समता बनाए रखना हमारे हाथ में है। हमें भौतिक पदार्थों के वशीभूत नहीं होना चाहिए, बल्कि विषमता से बचकर समता में स्थित रहने का प्रयास करना चाहिए। समता की साधना के माध्यम से आत्मा विशेष प्रसन्न होती है। यह आनंद बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि स्वयं के प्रयास से उपार्जित होता है। जो हमारा है, वह सदैव हमारा रहेगा, और जो पराया है, वह पराया ही रहेगा। भगवान महावीर ने भी समता की अद्भुत साधना की थी। पूज्य आचार्य श्री भिक्षु और गुरुदेव श्री तुलसी को जीवन में अनेक विरोधों का सामना करना पड़ा, परंतु उन्होंने अपने भीतर की शांति और समता को बनाए रखा। आलोचना का उत्तर शब्दों से नहीं, बल्कि श्रेष्ठ कर्मों से देना चाहिए। धैर्य और समता के साथ ही किसी भी परिस्थिति का समाधान संभव है।

उन्होंने आगे कहा कि समता ही सच्चा धर्म है। चाहे परिस्थितियाँ अनुकूल हों या प्रतिकूल, समता बनाए रखनी चाहिए। जैसे सूर्य अपने उदय और अस्त दोनों काल में लालिमा को नहीं छोड़ता, वैसे ही महान आत्माएं हर परिस्थिति में समता में स्थित रहती हैं। हमें भी समता की आराधना कर अपनी आत्मा को विशेष प्रसन्न बनाना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने उद्बोधन में भारतीय ऋषि परंपरा में संतों के चरणों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भक्तामर स्तोत्र और कल्याण मंदिर स्तोत्र जैसे ग्रंथों में भी तीर्थंकरों के चरणों को सबसे पहले प्रणाम किया गया है। गुरु के चरणों के स्पर्श से उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा हमें प्राप्त होती है। गुरु ऊर्जा के अखंड स्रोत होते हैं, और वे व्यक्ति धन्य होते हैं जिन्हें गुरु की कृपा दृष्टि और आशीर्वाद प्राप्त होता है।

पूज्यवर के स्वागत में सुराणा परिवार से कमल सुराणा और बहनों ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए। सिद्धार्थ सुराणा ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। वाव क्षेत्र से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूज्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। रूपल बेन ने अपनी भावना प्रकट करते हुए 'आराध्यम स्वागत गीत' का लोकार्पण किया। संयोजक विनीतभाई संघवी ने पूज्यवर को आमंत्रण पत्रिका भेंट की, जिसके उपरांत पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

किए गए कर्मों के फल से बचना है असंभव : आचार्यश्री महाश्रमण

नानी चिराई।
21 मार्च, 2025

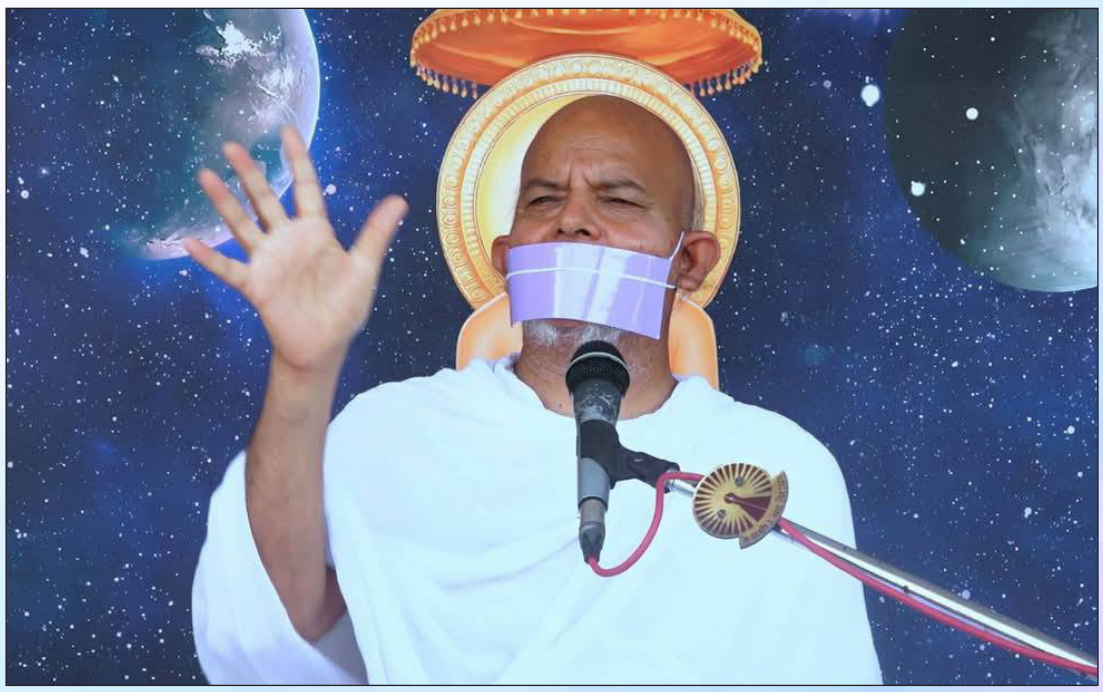

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः लगभग 10 किलोमीटर का विहार कर नानी चिराई के शक्ति विद्यालय पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि कर्मवाद का सिद्धांत न केवल जैन दर्शन में पाया जाता है, बल्कि अन्य दर्शनों में भी इसका उल्लेख है। कर्मवाद का संक्षिप्त सार यही है— ₹जैसी करणी, वैसी भरणी₹ अर्थात् जैसा किया जाता है, वैसा ही फल प्राप्त होता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि प्राणी को इस लोक और परलोक में अपने किए हुए कर्मों के अनुसार फल प्राप्त होता है। किए गए कर्मों के फल से बचना असंभव है। एक बुरे व्यक्ति में भी कुछ अच्छे गुण हो सकते हैं। इसी प्रकार, बुरे कर्म करने वालों का भी अपना पुण्य हो सकता है, जिससे उन्हें अपने कार्यों में सफलता मिल सकती है। किंतु यदि दुर्भाग्य प्रबल हो, तो असफलता भी हाथ लग सकती है।

मनुष्य अपने ही कर्मों के कारण कष्ट भोगता है। जो भी कर्म किए जाते हैं, उनके फल को भोगना ही पड़ता है। मनुष्य हंसते हुए कर्मों का बंधन करता है, लेकिन रोते हुए भी उनसे मुक्त नहीं हो पाता। कर्म अपना फल अवश्य देते हैं। इसलिए, अज्ञानतावश किए गए पाप कर्मों का बंधन अधिक कष्टकारी हो सकता है। व्यक्ति को अहिंसा और नैतिकता के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए और बेईमानी से बचना चाहिए। जीवन में धर्म की साधना और आराधना जितना संभव हो, उतना करना चाहिए। इस मानव जीवन का उपयोग, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए किया जाना चाहिए।

इस संसार रूपी सागर में हमारा जीवन निरंतर भ्रमण कर रहा है। यदि कोई डूबता हुआ व्यक्ति पास से गुजरती नौका में बैठने के बजाय पत्थर पकड़ने का प्रयास करे, तो वह और अधिक डूब जाएगा। इसी प्रकार, यदि मनुष्य जन्म प्राप्त करने के बावजूद धर्म का पालन न करे और विषय-सुख तथा तृष्णा में आसक्त हो जाए, तो वह अपने जीवन का सदुपयोग नहीं कर रहा। धर्म को विपत्ति और आपत्ति में भी नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे धन चला जाए। हमारी निष्ठा ऐसी होनी चाहिए कि— ₹प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभाएंगे।₹ साधु ने जो संकल्प लिया है, वह नहीं छूटना चाहिए। गृहस्थों को भी अपने नियमों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए, चाहे प्राण भी चले जाएं। इस प्रकार, मानव जीवन का सर्वोत्तम उपयोग कर, धर्म की साधना करनी चाहिए।

केवल नाम से नहीं, आचरण से बनें जैन

विरार।

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने श्रावक सम्मेलन में उपस्थित विरार श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा कि प्रकाश, आनंद और शक्ति की यात्रा जहां से प्रारंभ होती है, वह सम्यक दर्शन कहलाता है। व्रत की चेतना से भावित यात्रा श्रावकत्व होती है। श्रावकत्व की घनीभूत चेतना साधुत्व है और वही यात्रा आगे बढ़ती हुई सिद्धत्व व बुद्धत्व की धारक बनती है। अनुयायी जन्मजात होते हैं, परंतु श्रावक बनने के लिए व्रत-चेतना का जागरण आवश्यक है। हम सौभाग्यशाली हैं जिन्हें प्रभु महावीर का वीतराग शासन मिला और साधना के लिए तेरापंथ नाम से विख्यात भिक्षु शासन प्राप्त हुआ।

साध्वीश्री ने कहा कि संघ की नींव को गहरा करने में साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का महनीय बलिदान है। विनय, समर्पण, और बुजुर्गों के प्रति सम्मान जैसे विशेष गुण हमें संस्कार रूप में प्राप्त हुए हैं। आज यह विचारणीय विषय है कि इन गुणों का कितना संवर्धन हो रहा है और कितना ह्रास। उन्होंने कहा कि जिस संघ के सदस्य विद्याशील, संगठित, विनयवान और समर्पित होते हैं, उसका ग्राफ सदैव ऊंचा होता है। एक गुरु की आज्ञा और गुरु निष्ठा का अद्भुत रूप तेरापंथ संघ में दिखाई देता है। चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी वाचन करते हुए साध्वीश्री ने प्रेरणा दी और कहा कि संघ की मौलिक मर्यादाएं हमारी पथ-प्रदर्शक हैं। हमने संघ की शरण को स्वीकार किया है और हमारा विश्वास आत्मदर्शन में है, न कि प्रदर्शन में। हर व्यक्ति को अपने सिद्धांतों पर अडिग रहना चाहिए।

समाज में जो कुरीतियां जन्म ले रही हैं, उनका अंत हो। समाज को स्वस्थ बनाने के लिए मौन धारण करने के बजाय कुरीतियों पर प्रहार करें। जो समाज अनुशासन और मर्यादा में चलता है वही जागरूक समाज कहलाता है। अपने इरादों को मजबूत बनाएँ, उन्हें साकार करें और अपने हौसलों को ऊंचा रखें। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने वर्तमान सामाजिक प्रवृत्तियों की आलोचना करते हुए कहा कि आज प्री-वेडिंग पार्टी, पूल पार्टी, हुक्का पार्टी और शादी जैसे प्रसंगों पर जैन समाज में शराब की बोतलें खुलना शोभास्पद नहीं है। परिवारों को और भावी पीढ़ी को सुरक्षित रखना अभिभावकों का परम दायित्व है। केवल नाम से नहीं, बल्कि आचरण से जैन बनना आवश्यक है।

विरार की धरती पर प्रथम बार आयोजित श्रावक सम्मेलन के अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि वसई-नालासोपारा-विरार स्तरीय यह श्रावक सम्मेलन वरदान बने, ऐसा पवित्र संकल्प जरूरी है। गुरु निर्देशानुसार इन क्षेत्रों की हमारी यात्रा में श्रद्धा का पारावार उमड़ रहा है। श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और गुरु इंगित आराधना की भावना निरंतर प्रवर्धमान रहे।

गण विकास में समय और शक्ति का सम्यक नियोजन होता रहे और कहीं हमारी किसी भूल से युवा पीढ़ी मार्ग से विचलित न हो—ऐसा संकल्प और प्रयास अवश्य हो।

साध्वी शौर्यप्रभा जी ने कहा कि संघ के सच्चे सैनिक बनकर उसकी सुरक्षा के लिए सतत चिंतन करना हर श्रावक का दायित्व है। साध्वी वृंद ने 'तेरापंथ अक्षरधाम म्यूजियम' की भव्य प्रस्तुति दी। वहीं ज्ञानशाला के किशोरों और कन्याओं द्वारा प्रस्तुत 'तेरापंथ मिलिट्री फोर्स' कार्यक्रम ने सभी में नया जोश भर दिया। विरार महिला मंडल द्वारा मंगल संगान के पश्चात, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष किरण हिंगड़ और तेरापंथ सभा विरार के अध्यक्ष अजयराज फुलफगर ने विशेष अतिथियों, पदाधिकारियों और संपूर्ण परिषद का हार्दिक स्वागत किया।

साध्वी वृंद और भिक्षु भजन मंडली विरार द्वारा भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया गया। विरार सभा के मंत्री लक्ष्मीलाल डांगी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ने किया। पूरे समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

पंद्रह दिवसीय उपासना से पाई नव ऊर्जा

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में युवा वाहिनी एवं चौका सत्कार के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु गांधीनगर के अध्यक्ष विमल धारीवाल के नेतृत्व में 25 सदस्यीय टीम ने आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में 15 दिवसीय विहार सेवा उपासना में भाग लिया। इस अवधि में, सदस्यों को प्रतिदिन विहार सेवा, गोचरी सेवा, प्रवचन श्रवण, सामायिक एवं साधु-साध्वियों की सेवा उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल ने परिषद द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन आचार्य श्री महाश्रमणजी, मुख्य मुनि महावीर कुमारजी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी एवं पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमारजी के समक्ष प्रस्तुत किया। आचार्य श्री ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा हर परिषद् सदस्य को इस साल 25 बोल सीखने का लक्ष्य रखना चाहिए। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने आचार्य श्री भिक्षु त्रि-शताब्दी वर्ष के तहत स्वामीजी के इतिहास को पढ़ने की प्रेरणा प्रदान की, जबकि साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने तेरापंथ के इतिहास को जानने एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। चौका सत्कार हेतु मनोहरलाल, विमल, चिराग कटारिया एवं पारसमल, सुरेशकुमार संचेती परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ। 15 दिवसीय सेवा में 5 अलग-अलग समूहों ने 3-3 दिन की सेवा दी एवं अपने आराध्य के समक्ष अपनी प्रस्तुति भी दी।

मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन

बोरावड़।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी गुप्तिप्रभा जी के मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धा और समर्पण भाव से संपन्न हुआ। इस अवसर पर संघ के प्रति श्रद्धा की भावना को निरंतर बढ़ाने का संदेश देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि मील के पत्थरों को न देखकर बस निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। बोरावड़ के श्रावकों में गुरु के प्रति भक्ति, धर्म में अनुरक्ति और साधना में निरंतर शक्ति बनी रहे। उन्होंने कहा कि गुरु दृष्टि को समझते हुए वर्धमान महोत्सव को सफल बनाने का प्रयास हर किसी का संकल्प होना चाहिए। साध्वी मौलिकयशा जी और साध्वी भावितयशाजी ने भी संघ समर्पण के प्रति तैयार रहने की प्रेरणा देते हुए अपने भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया। कार्यक्रम में कैलाश गेलड़ा, तेयुप अध्यक्ष मनीष सुराणा, सभा अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा, महिला मंडल और कन्या मंडल की संयोजिका प्रज्ञा लूणिया तथा ज्ञानशाला की ओर से गौरवी लोढ़ा ने भी अपने भावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। संचालन पायल लूणिया ने किया।

स्वरधारा कविता पाठ का आयोजन

गंगाशहर।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा पूर्व संध्या में स्वरधारा कविता पाठ का आयोजन शांतिनिकेतन के प्रांगण में साध्वी विशद् प्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि की भूमिका सुमन छाजेड़ भाजपा जिला अध्यक्ष बीकानेर शहर रही। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य ममता रांका ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। स्वरधारा में कवियत्री मनीषा आर्य सोनी एवं सरोज वाला को आमंत्रित किया गया। मंगलाचरण सुनीता पुगलिया ने प्रेरणा गीत काव्य पाठ द्वारा किया। स्वागत वक्तव्य मंत्री मीनाक्षी आंचलिया एवं रेखा चौरड़िया द्वारा काव्य पाठ से किया गया। मुख्य कवियित्री का परिचय पिंकी चोपड़ा ने दिया।

मनीषा सोनी ने धारा प्रवाह 'नारी तू स्वाभिमानी' विषय पर काव्य पाठ करके सब का मन मोह लिया। कवियत्री सरोज भाटी ने 'नारी तू नारायणी' विषय पर कविता पाठ किया। तत्पश्चात संतोष बोथरा, सुमित्रा बोथरा, प्रिया पारख, राजश्री ललवानी, कमलेश सामसुखा ने नारी जागृति पर कविता पाठ किया। साध्वी लब्धियशा जी ने नारी निर्माण एवं सृजन पर अपना उद्बोधन दिया। साध्वी विधिप्रभाजी द्वारा नारी उत्थान पर कविता प्रस्तुत की गई। समणी चैतन्यप्रज्ञाजी ने नारी अभिमान पर अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ सभा से उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ ने महिला दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की। अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप गंगाशहर के उपाध्यक्ष ललित राखेचा ने राजा जनक का उदाहरण देते हुए हर नारी से आह्वान किया कि वह अपने घर की बेटी और बहू को सक्षम बनाने में पीछे ना हटे। मुख्य अतिथि एवं कवियत्री का सम्मान मंडल की बहनों द्वारा साहित्य भेंट करके किया गया। कार्यक्रम में आभार रुचि छाजेड़ ने किया एवं सफल संचालन कार्यक्रम प्रभारी कविता चोपड़ा द्वारा किया गया।

लिंगायत मठ के स्वामीजी के साथ आध्यात्मिक मिलन

मलनाड, कर्नाटक।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी का मलनाड, कर्नाटक में पदयात्रा करते हुए शिवमोग्गा-चन्नागिरी में मंगल प्रवेश हुआ। वहां स्थित श्री आलस्वामी वीरत्ता लिंगायत मठ के प्रमुख डॉ. बसवा जयचंद्रास्वामी ने मुनिश्री का मठ में आगमन पर भावपूर्वक स्वागत और अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि यह पहला अवसर है जब वे किसी जैन मुनि से भेंट कर रहे हैं।

स्वामीजी और मुनिश्री के बीच जैन दर्शन के विविध विषयों पर लगभग एक घंटे तक गहन आध्यात्मिक चर्चा हुई। स्वामीजी ने कहा कि मुनिश्री से संवाद करके उन्हें नई आध्यात्मिक जानकारी प्राप्त हुई। डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान तथा आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा की जानकारी देते हुए पूज्य गुरुदेव का साहित्य 'विजयी बनो' स्वामीजी को भेंट किया। मठ के संचालक अध्यक्ष राजेश्वरैया राजप्पा ने शिव मंत्रोच्चारण के साथ मुनिवर का स्वागत किया। इस अवसर पर बेंगलुरु से अनिल धारीवाल, स्थानीय कार्यकर्ता तेजराज भरत सेठिया, डॉ. सिद्धलिंग स्वामी, रामचंद्र प्रजापत आदि उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि पर विविध कार्यक्रम

गंगाशहर

उग्रविहारी तपोमुर्ति मुनि कमल कुमार जी के पावन सान्निध्य में बोथरा भवन में होली चातुर्मास एवं शासनमाता की पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी एक उच्चकोटि की आत्म साधिका थी। उन्होंने तीन-तीन आचार्यों का गहरा विश्वास प्राप्त किया। अपने लेखन, वक्तव्य, अनुशासन, कौशलता से सबको अपना बना लिया था। अपनी पापभीरुता, कर्तव्य परायणता से साध्वी ही नहीं, साध्वीप्रमुखा, महाश्रमणी, संघ महानिदेशिका, असाधारण साध्वीप्रमुखा, शासनमाता के खिताब को प्राप्त किया। इतने-इतने अलंकरण प्राप्त होने पर भी उन्हें अहं नहीं था, सबके साथ विनम्र व्यवहार था। मुनिश्री ने कहा - मैं अपना सौभाग्य मानता हूं कि जब वे साध्वीप्रमुखा पद पर आसीन हुई वह दृश्य भी देखने का अवसर मिला तो अंतिम श्वास के साक्षी बनने का अवसर भी प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में मुनि श्रेयांसकुमारजी, मुनि विमलविहारी जी, मुनि नमिकुमारजी, दीपक आंचलिया तथा महिला मंडल की बहनों ने भी अपने भावपूर्ण विचार रखे। रात्रिकालीन भक्ति संध्या मे भंवरलाल डागलिया, मनोज छाजेड़, पवन छाजेड़, चैनसुख गुगलिया, राजेन्द्र बोथरा, तोलाराम श्यामसुखा, मोहन भंसाली, राजेन्द्र सेठिया आदि ने अपने मुधुर गीतों और वक्तव्य से साध्वीप्रमुखा जी के जीवन का चित्रण किया। मुनि श्रेयांसकुमार जी ने गीत का संगान कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर तपस्या, सामायिक, मौन व क्षमा की साधना का सुन्दर क्रम बना। मुनिश्री ने होली के इतिहास से परिचित कराते हुए आत्मानुशासन की प्रेरणा प्रदान की।

पीलीबंगा

साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में होली चातुर्मास व शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में शासनमाता की महिमा का गुणगान करते हुए कहा कि वे विशेषताओं की पुंज, श्रमशीलता और ग्रहणशीलता का अद्भुत संगम थी। विद्वता के शिखर तक की इस यात्रा के अनेकों द्वार थे। आपकी संकल्प शक्ति गजब की थी और संकल्प शक्ति से ही लोह पुरुष आचार्य श्री तुलसी के इतिहास को अपनी लेखनी से लिखा। आपकी कर्तृत्व की गहराई, विशालता एवं करुणा को शब्दों में बांधना संभव नहीं है। साध्वी पुनीतयशा जी, साध्वी प्रगतिप्रभा जी, साध्वी प्रणतिप्रभा जी ने अनेकों संस्मरणों को उल्लेखित करते हुए शासनमाता के कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की शुरुआत बांठिया परिवार की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। कार्यक्रम में आंचलिक सभा महामंत्री ऋषभ चौरडिया, पीलीबंगा सभा मंत्री प्रकाश डाकलिया, पुष्पा नाहटा, महिला मंडल की बहनें आदि ने विचारों व गीतिका के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। कन्या मंडल द्वारा शब्द चित्र की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री सुशीला नाहटा द्वारा किया गया।

बेंगलुरु

गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम 'अभ्यर्थना' का आयोजन किया गया। साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुमुक्षु कला का जीवन उत्कर्ष, उर्ध्वारोहण व अभ्युदय का सफर था। उन्होंने सकारात्मक सोच के साथ विकास के पायदानों पर कदम बढ़ाते हुए शासनमाता तक का लंबा सफर तय किया। कला से कनकप्रभा, कनकप्रभा से संघ महानिर्देशिका पद तक पहुंचकर उन्होंने नारी समाज का गौरव बढ़ाया। संघ विकास में अपना पुरुषार्थ एवं श्रम नियोजित कर उन्होंने अनेक प्रतिभाओं को उजागर किया। उनका संघ पर अत्यंत उपकार है। आज उनका अभाव हमें खटकता है, लेकिन उनका प्रभाव संघ के हर व्यक्ति के दिल व दिमाग पर है। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा एक विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। वे अपने कर्तृत्व एवं श्रम से असाधारण बन गई थीं। कोई उन्हें बौद्ध भिक्षुणी के रूप में देखता था, कोई मदर टेरेसा के रूप में, तो किसी को उनमें सरस्वती का स्वरूप दिखाई देता था। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने उनके अनुशासन का प्रभाव बताते हुए कहा कि उनका जीवन मर्यादित व अनुशासित था। साध्वी रौनकप्रभाजी ने उन्हें एक उन्नत व्यक्तित्व बताते हुए मधुर गीतिका का संगान किया। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य देते हुए आज के कार्यक्रम तथा होली चातुर्मास गांधीनगर को प्रदान कराने हेतु साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर महिला मंडल एवं ज्ञानशाला तथा तेरापंथ युवक परिषद की भजन मंडली 'प्रज्ञा संगीत सुधा' द्वारा शासनमाता के प्रति गीतिका के माध्यम से भावांजलि अर्पित की गई। मुख्य अतिथि के रूप में पधारी पूर्व मेयर पद्मावती ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की। इस विशेष अवसर पर बैंगलोर की विभिन्न संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, अनेक गणमान्यजन एवं श्रावक श्राविका समाज उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मार्दवश्रीजी ने किया तथा आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक राजेंद्र बैद ने किया।

मंड्या

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की पुण्य तिथि के अवसर पर साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन मंड्या में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुभारम्भ महिला मण्डल के गीत से हुआ। इस अवसर पर साध्वी सिद्धप्रभाजी ने कहा - शासनमाता अनुत्तर विशेषताओं की पुंज थी। करुणा और वात्सल्य की धनी थी। जिस मां में करुणा नहीं होती उसके लिए एक-दो बच्चों का पालन भी मुश्किल हो जाता है। वहीं शासन माता लगभग 500-550 साध्वियों का संरक्षण करती थी। साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने जीवन में सैकड़ों अनगढ़ पत्थरों को अपनी ममता से तराशा है, विकास के नए-नए द्वार उद्घाटित किए हैं। ऐसी शासनमाता चिरकाल तक अमर रहेंगी। साध्वी श्री ने आगे कहा- आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें कला से साध्वी कनकप्रभा, संघ महानिर्देशिका, साध्वी प्रमुखा आदि पदों से नवाजा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उन्हें भगवती संबोधन प्रदान किया। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने असाधारण और शासनमाता अलंकरण से विभूषित किया। साध्वीश्री ने कहा घर में माँ का जितना प्यार नहीं मिलता उससे कई गुणा अधिक हमें शासनमाता का प्यार मिला। हमारा सौभाग्य है कि हमें उनके अन्तिम समय में उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर तीनों साध्वियों ने संस्मरणों की रोचक प्रस्तुति दी तथा मधुर गीत का संगान किया। कन्या मण्डल ने 'ये जहां तुम्हे पुकारे' परिसंवाद प्रस्तुत किया। सभा मंत्री विनोद भंसाली एवं चन्दनमल बोहरा ने भावांजलि अर्पित की। अंत में सामूहिक जप के साथ कार्यक्रम परिसम्पन्न हुआ। संचालन साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने किया।

युग की लगाम को अपने हाथों में थामने वाला है युवा

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु द्वारा 'युवा शक्ति–संघ भक्ति' विषय पर बेंगलुरु स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन साध्वी संयमलताजी के सानिध्य में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संयमलताजी के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। तत्पश्चात् प्रज्ञा संगीत सुधा एवं सभी परिषदों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

साध्वीसंयमलता जी ने अपने प्रवचन में युवाओं को संबोधित करते हुए कहा— देश, समाज, संगठन या संस्था का भविष्य युवा हैं। युवा जोश, ऊर्जा और शक्ति का जीता-जागता उदाहरण होते हैं। युवा दुनिया की तकदीर बदल सकते हैं। नए स्वर, नई उमंग, नए अरमान और नई मंजिलें तय कर सकते हैं। युवा संयम और अनुशासन का पर्याय है। तेरापंथ धर्म संघ में आचार्यों के प्रति भक्ति युवाओं की शक्ति को सहस्र-गुणित कर देती है। जब युवा शक्ति भक्ति से सरोकार रखती है, तो वह अपनी शक्ति का सही नियोजन कर सकती है। साध्वी श्री ने प्रेरणा देते हुए आगे कहा— 'युवा, जो इस युग की लगाम अपने हाथों में थामे हुए हैं, उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि वेज और नॉनवेज होटलों में जाने से बचें और नशामुक्त जीवन जीने का प्रयास करें।' कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा कि युवा उत्साह, साहस और क्रांति का प्रतीक हैं। संघ और संघपति की भक्ति युवाओं की शक्ति का सही मार्गदर्शन करती है।

साध्वी श्री ने अनेक युवाओं के भक्ति से जुड़े संस्मरणों एवं घटनाओं का उल्लेख किया। इस अवसर पर अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने वर्तमान के युवाओं की भक्ति का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा— इस क्रांतिकारी संघ में युवा न केवल शक्तिशाली हैं, बल्कि भक्ति से भी संपन्न हैं, जो संघ को तेजस्वी एवं यशस्वी बना रहे हैं।

प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने कहा— शक्ति और भक्ति का संयोग युवा को शिखर तक पहुंचा सकता है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने कहा— यदि युवा में भक्ति आ जाए, तो उसकी शक्ति उर्वरा हो जाती है और उसे सही दिशा मिल जाती है। शाखा प्रभारी अमित दक ने तेरापंथ युवक परिषद् के कार्यों की सराहना की और युवाओं को समाज सेवा के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के अंत में परिषद् अध्यक्ष विमल धारीवाल ने सभी आगंतुकों, सहयोगी संस्थाओं एवं प्रायोजकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने इस आयोजन की सफलता का श्रेय सभी उपस्थित सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं को दिया। इस कार्यशाला के आयोजन में सुधीर पोकरना का विशेष श्रम नियोजित हुआ। कार्यशाला के प्रायोजक गौतमचंद, विनोद कुमार मुथा परिवार का परिषद् द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बेंगलुरु की विभिन्न शाखाओं— विजयनगर, राजाजी नगर, HBST हनुमंतनगर, राजराजेश्वरी नगर, टी. दासरहल्ली एवं यशवंतपुर से आए परिषद् पदाधिकारियों और सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़ एवं बेंगलुरु की परिषदों के अध्यक्ष, पदाधिकारी, अभातेयुप परिवार और सदस्य एवं श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबर

एक दिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन

गंगाशहर। आचार्य तुलसी समाधि स्थल पर एक दिवसीय आवासीय प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। प्रशिक्षक संजू लालाणी व धीरेंद्र बोथरा द्वारा आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग व ध्यान के विभिन्न प्रयोग कराए गए। इस शिविर में 71 शिविरार्थियों ने पूरी तन्मयता से भाग लिया। मुनिश्री ने सभी शिविरार्थियों को अपने उद्बोधन में अपने शरीर को स्वस्थ रखते हुए आत्मा को परमात्मा कैसे बनाया जाए, इसके लिए संयम के साथ अपने कार्य करते हुए तप, जप और ध्यान करने की प्रेरणा दी। भोगवादी प्रवृत्ति से दूर रहकर तप, संयम से अपने जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा दी और शिविर में जो कुछ सिखाया जाता है, उसे घर पर भी निरंतर चालू रखने की प्रेरणा दी। शिविर में 500 से अधिक सामायिक हुई। कई शिविरार्थियों ने शिविर के अनुभव बताए।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं राउंड ईयर ह्यूमैनिटी थीम के अंतर्गत मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कैंप का आयोजन मंत्री ग्रीन अपार्टमेंट मल्लेश्वरम एवं शोभा इंद्रप्रस्थ अपार्टमेंट राजाजीनगर में आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 24 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक ने परिषद परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया। तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने सभी रक्तदाताओं को धन्यवाद ज्ञापन किया। सुव्यवस्थित आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद् और तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

गुवाहाटी। तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी द्वारा नॉर्थ गुवाहाटी स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (IIT) के 6 हॉस्टल में गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल ब्लड बैंक, सहरिया ब्लड बैंक, मारवाड़ी हॉस्पिटल ब्लड बैंक, स्वागत हॉस्पिटल ब्लड बैंक, बी बरुआ हॉस्पिटल ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया। जिसमें कुल 301 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। इस रक्तदान शिविर में अध्यक्ष सतीश भादानी के नेतृत्व में पदाधिकारी, कार्यकरिणी सदस्य, रक्तदान संयोजक नवीन मालू एवं संयम छाजेड़ और तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों ने अपनी सेवाएं प्रदान की। कैंप के आयोजन में पूर्व अध्यक्ष बजरंग सुराणा का विशेष सहयोग रहा।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरीनगर द्वारा निःशुल्क आंखों की चिकित्सा शिविर का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर आई एंड डेंटल केयर में किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नवकार मंत्र के संगान से हुई। डॉ. प्रकाश जैन एवं डॉ. दीक्षा विजय कुमार ने शिविर में पधारे सभी लोगों की जांच कर उन्हें उचित सलाह दी। इस शिविर में लगभग 34 लोगों ने अपनी जांच करवा कर लाभ लिया। एटीडीसी टीम द्वारा डॉ. प्रकाश एवं डॉ. दीक्षा का सम्मान किया गया। इस अवसर पर एटीडीसी प्रभारी नरेश बांठिया, राष्ट्रीय एटीडीसी सह प्रभारी डॉ. आलोक छाजेड़, राजेश भंसाली, राकेश दुगड़, सुशील भंसाली, विपुल पितलिया ने श्रम नियोजित किया।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **जयपुर।** मंजू-जयप्रकाश घोषल के नूतन आवास में ह्री संस्कारक श्रेयांस कोठारी ने जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया।

■ **राजराजेश्वरीनगर।** चूरू निवासी बैंगलोर प्रवासी नरेन्द्र विजय लक्ष्मी विवेक श्रद्धा मणोत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान मैसूर रोड स्थित नवमी अपार्टमेंट में करवाया गया। संस्कारक दिनेश मरोठी ने नमस्कार महामंत्र एवं लोगस पाठ का स्मरण कर प्रवेश करवाया। फिर पूर्ण विधि विधान ने मंत्रोचारण कर उनका अर्थ बताते हुए बहुत ही सुंदर तरीके से गृहप्रवेश के कार्यक्रम को सम्पन्न कराया।

■ **भीलवाड़ा।** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् भीलवाड़ा के अंतर्गत संपत लाल, सागरमल, विमल कुमार, निर्मल कुमार, प्रांजल खाब्या के नवनिर्मित बी.एम.निवास का गृह प्रवेश संस्कार, संस्कारक अशोक सिंघवी ने विधि पूर्वक संपन्न करवाया।

साइक्लोथॉन का भव्य आयोजन

हुबली।

तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा फिट युवा हिट युवा आयाम के अंतर्गत साइक्लोथॉन का भव्य आयोजन वॉकिंग ग्राउंड, कुसुगल रोड पर किया गया।

इस कार्यक्रम में बच्चे, किशोर, कन्याएं, महिलाएं, युवक एवं प्रौढ़ सभी ने पूरे उत्साह और ऊर्जा के साथ भाग लिया। लगभग 100 सदस्यों की उत्साहजनक उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक जसराज महेंद्र कुमार, मुकेश कुमार लुनिया और राजेंद्र इलेक्ट्रिकल्स रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत युवक परिषद के सदस्यों द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। इसके पश्चात तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विशाल बोहरा ने सभी का स्वागत करते हुए अभातेयुप के इस विशेष आयाम की जानकारी दी।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने भी अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में 15 मिनट का वार्मअप एक्सरसाइज सेशन विकास वेदमुथा द्वारा प्रभावशाली ढंग से कराया गया।

इसके बाद साइक्लोथॉन रेस के चार राउंड आयोजित किए गए— पहले छोटे बच्चों का, फिर बड़े बच्चों का, उसके बाद महिलाओं और कन्याओं का, और अंत में युवकों का राउंड हुआ। सभी राउंड के विजेताओं को युवक परिषद द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए, वहीं अच्छे प्रयास करने वालों को भी प्रोत्साहन स्वरूप उपहार दिए गए।

तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल, बच्चे और साइकिल प्रेमी भाई-बहनों की सक्रिय भागीदारी कार्यक्रम को विशेष बना गई।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में टीम फिट युवा हिट युवा के अनिल संकलेचा, अंकुश संकलेचा, कुशल वडेरा, हेमल चोपड़ा, नवीन श्रीश्रीमाल और संकेत वडेरा का समर्पित योगदान रहा। आभार ज्ञापन युवक परिषद के मंत्री विनोद भंसाली ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महावीर कोठारी ने किया।

मोबाइल कंटेंट क्रिएशन कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा OTR - OBLIVION के सहयोग से स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में लिटलेब मोबाइल कंटेंट क्रिएशन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। तेयुप राजाजीनगर के अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया, वहीं सभा ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक चौधरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मंगलकामनाएं संप्रेषित की।

कार्यशाला का शुभारंभ किशोर मंडल के ही सदस्य एवं प्रशिक्षक आर्यन गोलेच्छा ने किया। उन्होंने कार्यक्रम को बहुत ही खास बनाते हुए शानदार तरीके से मोबाइल कंटेंट क्रिएशन कार्यशाला की प्रस्तुति दी।

कार्यशाला में वीडियो एडिटिंग, कंटेंट क्रिएशन, विभिन्न प्रकार के टूल्स का प्रभावी उपयोग आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

चार घंटे तक चले इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को प्रोडक्शन टीम के अनुसार डायरेक्टर, एडिटर, स्क्रिप्ट राइटर आदि भूमिकाएं दी गईं और एक वीडियो बनाने का कार्य सौंपा गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभा, परिषद् के कार्यकर्ताओं के साथ किशोर मंडल से कार्यक्रम के सह-संयोजक भुवन कटारिया एवं किशोर साथी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

संबोधि

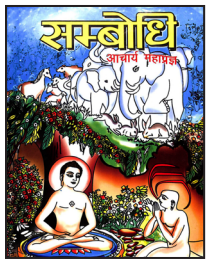

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

एक दिन वह भगवान् महावीर के पास आया। वंदना की और बोला– 'भगवन्! मैं आपकी आज्ञा पाकर पांच सौ निग्रंथों के साथ जनपद विहार करना चाहता हूं। भगवान् ने सुना और मौन रहे। जमालि ने दूसरी बार, तीसरी बार अपनी भावना प्रकट की, किंतु भगवान् मौन रहे। वह वंदना नमस्कार कर पांच सौ निग्रंथों को ले अलग यात्रा पर निकल पड़ा।

श्रावस्ती के कोष्ठक चैत्य में ठहरा हुआ था। संयम और तप की साधना चल रही थी। कठिन तप के कारण उसका शरीर रोग से घिर गया। शरीर जलने लगा। वेदना से पीड़ित जमालि ने साधुओं से बिछौना करने के लिए कहा। साधु बिछौना करने लगे। कष्ट से एक-एक क्षण भारी हो रहा था। पूछा-बिछौना बिछा दिया या बिछा रहे हो? श्रमणों ने कहा-किया नहीं, किया जा रहा है। दूसरी बार कहने पर भी यही उत्तर मिला। जमालि इस उत्तर से चौंक उठा। आगमिक आस्था हिल उठी। वह सोचने लगा-भगवान् का सिद्धांत इसके विपरीत है। वे कहते हैं-क्रियमाणकृत और संस्तीर्णमाण संसृत करना शुरू हुआ, वह कर लिया गया, बिछाना शुरू किया वह बिछा लिया गया-यह सिद्धांत गलत है। कार्य पूर्ण होने पर ही उसे पूर्ण कहना यथार्थ हैं। उसने साधुओं को बुलाया और मानसिक चिंतन कह सुनाया। कुछ एक श्रमणों को यह विचार ठीक लगा और कुछ एक को नहीं। जमालि पर जिनकी श्रद्धा थी वे जमालि के साथ रहे। मिथ्या आग्रह से वह आग्रही हो गया। दूसरों को भी उस मार्ग पर लाने का वह प्रयत्न करता रहा। अनेक लोग उसके वाग्जाल से प्रभावित होकर सत्य मार्ग से च्युत हो गए।

४८. मिथ्यावर्शनमापन्नाः, सनिदानाश्च हिंसकाः।
म्रियते प्राणिनस्तेषां, बोधिर्भवति दुर्लभा।।

जो मिथ्यादर्शन से युक्त हैं, जो भौतिक सुख की प्राप्ति का संकल्प करते हैं और जो हिंसक हैं, उन्हें मृत्यु के बाद भी बोधि की प्राप्ति दुर्लभ होती है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री भारमल जी युग

साध्वीश्री दीपांजी (जोजावर) दीक्षा क्रमांक 90

साध्वीश्री साधु क्रिया में कुशल, विनयपूर्वक विद्याध्ययन करने वाली, तीक्ष्ण बुद्धि की धनी, 32 सूत्रों का वाचन करने वाली, सूक्ष्म रहस्यों, चर्चाओं तथा बोल–थोकडों की अच्छी धारणा वाली थी। कंठकला, वचन मधुरता, बुलन्द आवाज, आत्मिक पौरूष गजब का था। साध्वीश्री ने अपने पास रहने वाली सभी साध्वियों को योग्य तो बनाया ही साथ उन्हें तप की प्रेरणा दे तपस्विनी भी बनाया। उनके साथ रहने वाली साध्वियों ने अनेक बड़े तप किए। साध्वीश्री स्वयं एक तपस्विनी साध्वी थी।

आपने तप के अनेक थोकड़े किये। विगयादिक का परित्याग किया एवं दस प्रत्याख्यान बहुत बार किये। शीत ऋतु में बहुत वर्षों तक शीत सहन किया। अन्त में दो दिन का अनशन कर आराधक पद प्राप्त किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

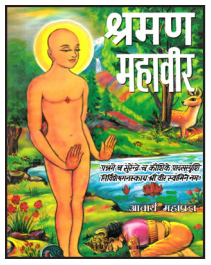

भगवान् ने व्यवस्था की दृष्टि से अपने गणों के नेतृत्व को सात इकाइयों में बांट दिया, जैसे-

१. आचार्य

२. उपाध्याय

३. स्थविर

४. प्रवर्तक

५. गणी

६. गणधर

७. गणावच्छेदक

ये शिक्षा, साधना, सेवा, धर्म-प्रचार, उपकरण, विहार आदि आवश्यक कार्यों की व्यवस्था करते थे। गण के नेतृत्व का विकास एक ही दिन में नहीं हुआ। जैसे-जैसे गणों का विस्तार होता गया, वैसे-वैसे व्यवस्था की सुसंपन्नता के लिए नेतृत्व की दिशाएं विकसित होती गई।

यह आश्चर्य की बात है कि संघीय नेतृत्व का इतना विकास अन्य किसी धर्म–परम्परा में नहीं मिलता। इस व्यवस्था का आधार था भगवान् महावीर का अहिंसा, स्वतन्त्रता और सापेक्षता का दृष्टिकोण। इसीलिए भगवान् ने आत्मानुशासन से मुक्त अनुशासन को कभी मूल्य नहीं दिया। भगवान् के धर्म–संघ में दस प्रकार की सामाचारी का विकास हुआ। उसमें एक सामाचारी है 'इच्छाकार'। कोई मुनि किसी दूसरे मुनि को सेवा देने से पूर्व कहता, 'मैं अपनी इच्छा से आपकी सेवा कर रहा हूँ।' दूसरों से सेवा लेने के लिए कहा जाता– 'यदि आपकी इच्छा हो तो आप मेरा यह कार्य करें। 'सेवा लेने–देने तथा अन्य प्रवृत्तियों में बलप्रयोग वर्जित था। आपवादिक परिस्थितियों के अतिरिक्त आचार्य भी बल का प्रयोग नहीं करते थे।

दिनचर्या

भगवान् ने साधु-संघ की दिनचर्या निश्चित कर दी। उसके अनुसार मुनि दिन के पहले प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान, तीसरे में भोजन और चौथे में फिर स्वाध्याय किया करते थे। इसी प्रकार रात्रि के पहले प्रहर में स्वाध्याय, दूसरे में ध्यान, तीसरे में शयन और चौथे में फिर स्वाध्याय।

वस्त्र

भगवान् ने परिग्रह पर बड़ी सूक्ष्मता से ध्यान दिया। भगवान् ने दीक्षा के समय एक शाटक रखा था। यह भगवान् पार्श्व की परम्परा का प्रतीक था। कुछ समय बाद भगवान् विवस्त्र हो गए। वे तीर्थ-प्रवर्तन के बाद भी विवस्त्र रहे। उनके तीर्थ में दीक्षित होने वाले विवस्त्र रहें या सवस्त्र, इस प्रश्न का उत्तर एकांगी दृष्टिकोण से नहीं मिल सकता। जितेन्द्रिय होने के लिए वस्त्र-त्याग का बहुत मूल्य है। अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि में वह बहुत सहायक होता है। फिर भी स्याद्वाद-दृष्टि के प्रवर्तक ने विवस्त्रता का ऐकांतिक विधान किया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। यदि किया हो तो उसे स्वीकारने में मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। मुनि के वस्त्र रखने की परम्परा उत्तरकालीन हो तो उसे विचार का विकास या व्यवहार का अनुपालन मानना मुझे संगत लगता है। किन्तु इस तथ्य की स्वीकृति यथार्थ के बहुत निकट है कि भगवान् का झुकाव विवस्त्र रहने की ओर था। भगवान् पार्श्व के शिष्य विवस्त्र रहने में अक्षम थे। इस स्थिति में भगवान ने दोनों विचारों का सामंजस्य कर अचेल और सचेल-दोनों रूपों को मान्यता दे दी। इस मान्यता के कारण भगवान् पार्श्व के संघ का बहुत बड़ा भाग भगवान् महावीर के शासन में सम्मिलित हो गया।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का अनुष्ठान : सामायिक

धर्म और अधर्म आध्यात्मिक जगत् के प्रसिद्ध शब्द हैं। इनकी विवेचना में बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे गए हैं उनमें इनकी विभिन्न परिभाषाएं प्राप्त होती हैं। जैन आगमों में धर्म के बारे में विवेचन प्राप्त होता है। वहां एक जगह कहा गया है - **'समया धम्म मुदाहरे मुणी'** मुनि (भगवान महावीर) ने समता को धर्म कहा है। समता ही धर्म की सशक्त कसौटी है। जहां राग-द्वेष नहीं हैं समतामय स्थिति है, समतामय प्रवृत्ति है, वहां धर्म है। साधनाकाल में यह समता की भूमिका धर्म है। अभ्यास के द्वारा समता को पुष्ट किया जा सकता है। यदि व्यक्ति का सही लक्ष्य और निरन्तर गतिशीलता हो तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। समता की स्थिति को पुष्ट करने का एक माध्यम है सामायिक की साधना। श्रावक के बारह व्रतों में इसको नवां स्थान प्राप्त है। इसकी व्याख्या में श्रावक प्रतिक्रमण में लिखा गया है-

धर्म है समता, विषमता पाप का आधार है।
जैन शासन के निरूपण का यही बस सार है।।
त्याग कर सावद्य चर्या सुखद सामायिक करूं।
लीन अपने आप में हो मैं भवोदधि को तरूं ।।

एक सामायिक का कालमान एक मुहूर्त (४८ मिनट) है। इस काल में सामायिकस्थ श्रावक साधु जैसा बन जाता है। सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान होता है। सावद्य शब्द स+अवद्य इन दो शब्दों के योग से निष्पन्न हुआ है। 'स' का अर्थ है सहित और अवद्य का अर्थ है–पाप। पाप सहित को सावद्य कहा जाता है। योग शब्द का अर्थ है–प्रवृत्ति। सामायिक में पाप सहित प्रवृत्ति संकल्प के द्वारा परित्यक्त की जाती है अथवा यों कहा जा सकता है कि सामायिक में अशुभ योग आश्रव का परित्याग किया जाता है। इस काल में श्रावक निम्न अठारह पापों का सेवन नहीं कर सकता। हिंसा, झूठ, चौर्य, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और देष, कलह, अभ्याख्यान (दोषारोपण), पैशुन्य (चुगली), परपरिवाद (पर निन्दा), रति–अरति (असंयम के प्रति अनुराग और संयम से विराग), मायामृषा (माया युक्त झूठ का प्रयोग) और मिथ्यादर्शनशल्य।

जैन धर्म में त्याग प्रत्याख्यान के सम्बन्ध में करण और योग का विधान रहा है। करण और योग के आधार पर यह निश्चय किया जाता है कि अमुक त्याग किस सीमा तक किया गया है। करण तीन हैं (१) करना (२) करवाना (३) अनुमोदन करना। योग भी तीन हैं (१) मन (२) वचन (३) काय। तीन करण और तीन योग से नौ भंग बनते हैं- (१) करना नहीं मन से (२) करना नहीं वचन से (३) करना नहीं काय से (४) करवाना नहीं मन से (५) करवाना नहीं वचन से (६) करवाना नहीं काय से (७) अनुमोदन करना नहीं मन से (च) अनुमोदन करना नहीं वचन से (६) अनुमोदन करना नहीं काय से।

श्रावक के तीन प्रकार की सामायिक हो सकती हैं-

(१) छह कोटि की सामायिक– इसमें दो करण तीन योग से, सावद्य योग का प्रत्याख्यान किया जाता है। (करना नहीं मन से, वचन से, काय से, करवाना नहीं मन से, वचन से, काय से)

(२) आठ कोटि की सामायिक– इसमें दो करण और तीन योग के त्याग

तो पूर्ववत् हैं ही, अनुमोदन नहीं करना वचन से, काय से यह प्रत्याख्यान और हो जाता है।

(३) नौ कोटि की सामायिक– इसमें एक अवशेष भंग (अनुमोदन नहीं करना मन से) का प्रत्याख्यान और हो जाता है। साधारणतया छः कोटि की सामायिक का प्रत्याख्यान हमारे यहां प्रसिद्ध है। यह सारा सामायिक का निषेधात्मक पक्ष है। सामायिक का विधेयात्मक पक्ष यह है कि सामायिक में खाली नहीं बैठकर के स्वाध्याय, ध्यान, जप, प्रवचन श्रवण, तत्त्वचर्चा, धार्मिक उपदेश इनमें से किसी न किसी प्रवृत्ति का आलम्बन रखना चाहिए, उसमें संलग्न रहना चाहिए, ताकि मन को अशुद्ध भावों से सुगमता से बचाया या सके। सामायिक में श्रावक के लिए खान-पान, स्नान आदि प्रवृत्तियां बन्द हो जाती हैं। चतुर्विध आहार के सेवन से श्रावक मुक्त रहता है। सामायिक में व्यापार आदि से सम्बन्धित सावद्य बात-चीत भी नहीं की जा सकती है। व्यापार सम्बन्धी सावद्य चिन्तन और आर्थिक चिन्ता भी सामायिक में अकरणीय होती है।

विजयचन्दजी पटवा पाली के निवासी थे। वे एक बार दुकान से उठकर सामायिक करने के लिए स्वामीजी (आचार्य भिक्षु) की सेवा में गए। वे बहुधा व्याख्यान के समय दो सामायिक किया करते थे। प्रतिदिन के क्रम से उन्होंने ज्योंही सामायिक का प्रत्याख्यान किया, कुछ क्षण पश्चात् उन्हें याद आया कि दुकान पर जो दो हजार रुपये बाहर से आए थे, वह थैला दुकान बन्द करते समय अन्दर रखना भूल गया हूं। उन्होंने अपनी समस्या स्वामीजी के सम्मुख रखते हुए कहा-'आज तो सामायिक में आर्त्तध्यान का कारण उपस्थित हो गया।'

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप्प** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री रंगलालजी (राजाजी का करेड़ा) (गणमुक्त) दीक्षा क्रमांक 339

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। गण में थे तब प्रायः एकान्तर तप करते थे। फिर बेले-बेले तप प्रारंभ किया। जो बाद में चालू रखा। तब के आंकड़े इस प्रकार है- उपवास/2395, 2/232, 3/159, 4/22, 5/8, 7/1, 9/1 तप के कुल दिन 3480, जिनके 9 वर्ष और 8 महीने होते है।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

अहमदाबाद

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद द्वारा आयोजित तथा ATDC द्वारा संचालित मेडिकल चेकअप कैंप सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ATDC द्वारा महिला दिवस के अवसर पर विशेष रियायती दरों पर महिलाओं के लिए विशेष जांच के पैकेज रखे गए जिसका 64 महिलाओं ने लाभ लिया। इस कैम्प को सफल बनाने में संयोजक विजय छाजेड़, अभिषेक संघवी और राहुल बालड़ का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्ष हेमलता परमार, तेयुप अध्यक्ष पंकज घीया और दोनों संस्था के पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही।

कांटाबांजी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्वरधारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। साथ ही मार्च माह की कार्यशाला— Meditate to Boost Your Energy का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सपना जैन द्वारा मंगल भावना से की गई। महिला मंडल की अध्यक्षा आशा जैन ने सभी का स्वागत करते हुए महिला दिवस पर अपने विचार रखे एवं नारी शक्ति पर काव्य पाठ किया। महिला मण्डल की अनेक बहनों ने सुंदर काव्य पाठ किया। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान की ओडिशा प्रभारी ममता जैन ने आसन, मुद्रा एवं लघु कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। प्रेरणा सम्मान अंजलि माझी (शिक्षिका एवं लेखिका) को साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदान के लिए वरिष्ठ श्राविका गोमती जैन के हाथों सम्मान पत्र दिया गया। इस कार्यक्रम में अन्य शाखाओं से भी महिलाओं ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रगति शाखा से शशि अग्रवाल ने नारी दिवस पर अपना वक्तव्य रखा। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की सचिव रितु जैन ने किया और प्रीति जैन ने आभार ज्ञापन किया।

गुवाहाटी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारीत्व का उत्सव - स्वरधारा' का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुआ। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत किया तथा नारी की महिमा के बारे में बताते हुए सभी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर काव्य तथा साहित्य में प्रतिभा संपन्न विभिन्न महिला कवयित्रियों ने अपनी प्रस्तुति से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। विशेष अतिथि के रूप में प्रज्ञा शर्मा, डॉ. कनकलता सेठिया, शशि सुराणा, चित्रा दुधोड़िया ने नारी के सृजन, संघर्ष, सफलता, समानता और सशक्तिकरण से संबंधित काव्य पाठ रोचक रूप में प्रस्तुत किया। मंडल की कई बहनों ने भी कविता के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। मुख्य अतिथि के रूप में कवयित्री एवं लेखिका पुष्पा सोनी को ₹प्रेरणा सम्मान₹ प्रदान किया गया। सभी कवयित्रियों को सम्मानित किया गया। मंत्री ममता दुगड़ ने सभी कवयित्रियों का परिचय दिया। रंजू बरडिया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए बताया कि गुरुदेव श्री तुलसी ने महिलाओं को सशक्त मंच प्रदान किया है। संयोजिका रंजू खटेड़ ने कहा कि नारी शक्ति की प्रेरणा स्रोत, शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के अनंत उपकारों के प्रति हम सदा ऋणी रहेंगे। धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष राजश्री दुगड़ ने किया। इस आशय की जानकारी प्रचार-प्रसार मंत्री विनीता सुराणा ने दी।

टिटिलागढ़

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में स्वरधारा एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय और बाहरी कवि-कवयित्रियों ने नारी के सृजन, संघर्ष और सफलता पर आधारित काव्य प्रस्तुतियां दीं, जो सभी को प्रभावित कर गईं। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी का स्वागत किया और अपनी कविता से नारी की शक्ति को दर्शाया। कवि टिकेलाल बेहरा, पुलस्ती बेहेरा, खीरसिंदु वीशी, ईश्वरचंद जैन, मानस रंजन साहू और कवयित्री ममता साहू, लक्ष्मी बगर्ती, बॉबी जैन ने भी भाग लिया। कवि ईश्वरचंद जैन और अन्य कवयित्रियों ने नारी को समाज की आधारशिला बताया। मुख्य वक्ता अंजलि बेहरा ने टिटिलागढ़ में नारी शक्ति के गठन की जानकारी दी। सुमन जैन ने भी अपने विचार साझा किए। अध्यक्ष बॉबी जैन को साहित्य और काव्य के लिए प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागियों का स्वागत दुपट्टा, मोमेंटो और साहित्य भेंट कर किया गया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली बहनों को पुरस्कार दिए गए। आभार ज्ञापन बॉबी जैन ने तथा संचालन पायल जैन ने किया।

राउरकेला

तेरापंथ महिला मंडल, राउरकेला द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्वरधारा-कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि लेखिका एवं कवयित्री डॉ. शकुन अग्रवाल को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'प्रेरणा सम्मान' दिया गया। अध्यक्ष तरुलता जैन ने सभी का स्वागत किया। संकल्प साहित्य संस्था की सचिव उषा अग्रवाल, शालू स्वरूप, पायल अग्रवाल, सुरभि बोथरा, नीतू कोठारी, ज्योति भंसाली ने नारी के सृजन, संघर्ष, सफलता और ममता पर आधारित सुंदर कविताओं से समा बांधा। शहर की मुख्य महिला संगठनों का जैन पट्ट एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया और महिला दिवस पर आह्वान किया कि सभी महिलाओं को एकजुट होकर हर क्षेत्र में खुद को समयानुकूल सक्षम बनाना चाहिए और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में ब्रह्मकुमारी की बहनें, दिगम्बर जैन समाज से वंदना जैन, रोटरी क्वीन से बरखा गुप्ता, लायंस क्लब से वर्षा अग्रवाल, जैन जागृति महिला मंच से रीना शाह, भक्ति मंडल से हर्षा ढोलकिया की टीम सहित विशेष उपस्थिति रही। मंच का सुंदर संचालन संगीता दुगड़ और नेहा जैन ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री कविता डागा ने किया।

किशनगंज

तेरापंथ महिला मंडल किशनगंज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को 'नारी का उत्सव - स्वरधारा' व प्रेरणा सम्मान के रूप में भव्य आयोजन किया गया। समणी भावितप्रज्ञा जी, समणी संघप्रज्ञा जी एवं समणी मुकुलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ समणी जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी द्वारा नारी शक्ति पर रचित 'प्रेरणा गीत' के द्वारा मंगलाचरण किया। मंडल की अध्यक्षा संतोष देवी दुगड़ ने सभी अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। नारी शक्ति की प्रतीक पधारी हुई सभी विशिष्ट अतिथिगण लेखिका मिली कुमारी, कवियत्री कुमारी निधि, डॉक्टर शालिनी प्रसाद, वकील सोनी कौशल, समाज सेविका डॉक्टर फरजाना बेगम, प्रिंसिपल अंकिता काला और मुख्य अतिथि, एस.टी. कमिश्नर वंदना वशिष्ठ को वस्त्र पट्टिका ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समणी निर्देशिका भावितप्रज्ञा जी ने नारी समाज को संबोधित करते हुए कहा राम हो या रहीम, कृष्ण हो या कबीर, मोहम्मद हो या पैगंबर, आचार्य भिक्षु हो या आचार्य श्री तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ हो या आचार्य श्री महाश्रमण जी ये सब महापुरुष मातृशक्ति की देन है। आज भी राजा महाराजा युग की जीजाबाई, अहिल्याबाई, मदर टेरेसा, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा, साध्वीवर्या जी अपनी अलग विशिष्ट पहचान लिए हुए हैं। तीन चीज अनमोल हैं - रोटी, पुस्तक और महिला। रोटी शरीर को पोषण देती है, पुस्तकें ब्रेन को पोषण देती है जबकि महिला व्यक्ति समाज, परिवार व धर्म संघ को अपना पोषण देती है। नारी की तेजस्विता के अनेक पक्ष हैं। सम्मानित कवियत्री गण ने नारी शक्ति पर प्रेरणा देते हुए कविता के रूप अपने भाव रखे और नारी शक्ति के दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं दी। महिला मंडल द्वारा कवियत्री मिली एवं निधि को सम्मानित किया गया। मिली ने सूरजापुरी भाषा में लिखित अपनी पुस्तक को महिला मंडल को भेंट स्वरूप प्रदान की। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष विजय करण दफ्तरी, नेपाल बिहार के अध्यक्ष चैनरूप दुगड़, भिक्षु सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष राजकरण दफ्तरी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रोहित दफ्तरी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष विनीत दफ्तरी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सबको शुभकामनाएं दी एवं आज की नारी को सलाम करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारियों की तथा अन्य सदस्यों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति रही। मंच का सफल संचालन ममता बैद ने किया। आभार ज्ञापन सोनिया श्रीमाल के द्वारा किया गया।

अमराईवाड़ी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के अंतर्गत अमराईवाड़ी महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका संगीता सिंघवी द्वारा किया गया। अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित बहनों का स्वागत करते हुए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के प्रथम चरण में 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने विचार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के दूसरे चरण में विशेष अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवि एवं शायर डॉ. हरिवंश मिश्रा को आमंत्रित किया गया। उन्होंने नारीशक्ति पर केंद्रित प्रेरणादायक कविताओं की प्रस्तुति दी, जिसे सभी ने खूब सराहा। कई बहनों ने भी मंच पर आकर अपनी भावनाएं कविता व वक्तव्यों के माध्यम से व्यक्त कीं। उपासिका संगीता सिंघवी ने पारिवारिक सौहार्द एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के उपयोगी सुझाव दिए। कार्यक्रम में कुल 31 बहनों की सहभागिता रही। आभार ज्ञापन महिला मंडल की मंत्री वंदना पगारिया ने किया।

कांदिवली, मुंबई

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अभातेममं निर्देशित स्वरधारा कार्यक्रम का भव्य आयोजन तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली द्वारा किया गया। मुंबई पूर्वाध्यक्ष भारती सेठिया के मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्षा विभा श्रीश्रीमाल ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। मंत्री नीतू दुग्गड़, मोनिका पामेचा, निशा दुग्गड़, रचना हिरण, सुशीला पामेचा, उपाध्यक्ष अल्का पटावरी एवं स्थानकवासी संप्रदाय की बहन हेतल भोसालिया ने कविताओं की प्रस्तुति दी गई। कन्या मंडल द्वारा बहुत ही रोचक प्रस्तुति दी गई। मोटिवेशनल स्पीकर एवं लाइफ कोच चिराग पामेचा द्वारा साइबर सिक्योरिटी एवं डिजिटल लिटरेसी पर एक विशेष सत्र का सफल आयोजन किया गया। अध्यक्षा विभा श्रीश्रीमाल ने अपने वक्तव्य में संपूर्ण नारी शक्ति को महिला दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए आधुनिकता और आध्यात्मिकता के बीच सामंजस्य बिठाकर महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कविता और साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाने वाली रचना हिरण को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया।

होली पर्व पर विविध कार्यक्रम

इचलकरंजी

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा होली के अवसर पर नवकार कलर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन ज्ञानशाला में किया गया, जिसमें 30 ज्ञानार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता नवकार मंत्र के पाँच रंगों पर आधारित थी, जिसमें कुल 25 प्रश्न शामिल थे। साथ ही 24 तीर्थंकरों और 11 आचार्यों के नाम से जुड़े प्रश्न भी पूछे गए। बच्चों को पाँच समूहों में बाँटकर पाँच राउंड में प्रश्नोत्तरी कराई गई। प्रशिक्षकों द्वारा स्कोरिंग के आधार पर प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले समूहों को विजेता घोषित किया गया। विजेता समूहों के सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए, वहीं सभी अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। प्रतियोगिता को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने में प्रशिक्षिकाएं वंदना पटवारी, सुनीता चोरड़िया एवं नीतू छाजेड़ का विशेष योगदान रहा। आयोजन के माध्यम से बच्चों को जैन धर्म के मूल मंत्रों और सिद्धांतों की जानकारी दी गई।

दिल्ली

डॉ. साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में 'आओ खेलें होली' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में लोक पर्वों का विशेष महत्व है। यह पर्व प्रधान संस्कृति जीवन विकास की आधारशिला है। इन्हीं पर्वों की श्रृंखला में होली का स्थान विशिष्ट है। बसंत ऋतु का आगमन प्रकृति के साथ जनचेतना में भी उल्लास भर देता है। होली का यह पर्व पवित्रता का प्रतीक है। रंगों के माध्यम से न केवल उल्लास प्रकट होता है, बल्कि यह मानवीय व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं। हमारे दैनिक व्यवहार, स्वभाव, वातावरण और जीवनशैली पर रंगों का विशेष असर देखा जाता है। यद्यपि पूरी दुनिया रंगीन है, फिर भी चेतना में नवसंचार, कषायों की शांति, आसक्ति की निवृत्ति और वैभव की भावना का शमन आवश्यक है। आनंदमय वातावरण में सकारात्मक सोच का विकास हो, हिंसा और दुर्भावनाओं को विराम मिले — यही आज की आवश्यकता है। साध्वी कुन्दनरेखा जी ने गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत लेश्या ध्यान के अभ्यास की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि यदि हम रंगों को सही अर्थ में समझ पाएं, तो हमारा परिवार, समाज और देश उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ सकता है। इस अवसर पर साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के साथ रंगों पर ध्यान करवा कर होली का आध्यात्मिक रूप से उत्सव मनाया और यह भी समझाया कि बाह्य रंगों का हमारे मन और व्यवहार पर कितना गहरा प्रभाव होता है। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि यह समय वसंत ऋतु के प्रभाव से शरीर को उल्लासित कर देता है। यह ऋतु परिवर्तन का संधिकाल है — सर्दी की समाप्ति और गर्मी की शुरुआत। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए नया आरंभ है। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन में पंच परमेष्ठी के प्रतीक पाँच रंग हमारे जीवन में शुभता और सकारात्मक ऊर्जा ला सकते हैं। साध्वीश्री ने 'होली' की हुरदंग पर स्वरचित गीत की शानदार प्रस्तुति भी दी। साध्वी कल्याणयशाजी ने कहा- रंगो का हमारे भाव स्वभाव पर गहरा असर दिखाई देता है। गहरा लाल रंग जहा शक्तिवर्धक है वही अतिमात्रा में इसका प्रयोग कषायों को बढ़ा भी सकता है। इंद्रधनुष के सात रंग हो या हमारे शरीर की बनावट में निहित अलग-अलग रंग इनका सही प्रयोग मनुष्य की दिशा और दशा बदल सकता है। हीरालाल गेलड़ा ने गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी।

लकवल्ली, कर्नाटक

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र के लकवल्ली में होली चतुर्मासिक पर्व कार्यक्रम श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के द्वारा आयोजित किया गया। मुनिश्री ने श्रद्धालु श्रावकों को होली के अवसर पर आध्यात्मिकता के रंग में रंगने की प्रेरणा दी। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने नवकार महामंत्र के पदों का प्रेक्षाध्यान केन्द्रों पर रंगों सहित ध्यान करवाते हुए ध्यान का जीवन में महत्व प्रतिपादित किया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नवकार महामंत्रोच्चारण से हुई। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज आछा ने किया। महिला मंडल शिमोगा की बहनों ने होली के रंगोत्सव पर आध्यात्मिक शब्द चित्र प्रस्तुत किया। लकवल्ली महिला मंडल ने स्वागत गीत तथा चिकमंगलूर से गुणवंती नाहर, स्थानीय समाज सेवी कार्यकर्ता रमेश कुमार, शिवयोगी तथा डॉ राजीव कुमार ने विचार प्रकट किए। कन्या मंडल से डिंपल, गवेषणा, जानवी जैन ने कविता प्रस्तुत की। आभार ज्ञापन राकेश गुलगुलिया ने तथा संचालन पायल आच्छा ने किया। कार्यक्रम में स्वरूप आच्छा, पदम आच्छा, नरेंद्र श्रीश्रीमाल आदि कार्यकर्ताओं का श्रम रहा।

शिवमोग्गा

आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमयशाजी आदि ठाणा 3 का प्रवेश तेरापंथ सभा भवन, शिवमोग्गा में हुआ। साध्वीश्री के प्रवचनों, जैन प्रश्नोतरी मंच, प्रेक्षा ध्यान शिविर, 'पहचानों साहित्य का नाम' जैसी रोचक प्रतियोगिताओं से वातावरण में अध्यात्म की सुगंध फैल गई। शिवमोग्गा में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी एवं मुनि आदित्य कुमार जी का साध्वीवृंद के साथ आध्यात्मिक मिलन अत्यंत भावविभोर करने वाला रहा। इस मिलन ने उपस्थित जनसमूह को अभिभूत कर दिया। साध्वी सोमयशा जी ने अपने भावों को उद्गार रूप में प्रकट किया, वहीं साध्वी सरलयशा जी ने मधुर गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया। डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने आत्मीयता के साथ आतिथ्य स्वीकारते हुए अपने भाव प्रकट किए। होली चातुर्मास कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल शिवमोग्गा द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का मंगलमय प्रारंभ किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष इदकराज मेहता, मंत्री चंदनमल जैन, ट्रस्ट अध्यक्ष भंवरलाल नाहर, चंद्रप्रकाश छाजेड़, स्थानीय युवक परिषद एवं महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की। महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत आध्यात्मिक होली पर आधारित लघु नाटिका ने सभी दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया। साध्वी डॉ. सरलयशा जी ने रंगों के जीवन में महत्व एवं उससे आने वाले सकारात्मक परिवर्तनों को रेखांकित करते हुए प्रयोगात्मक प्रस्तुति दी। साध्वी सोमयशा जी ने अपने उद्बोधन में होली पर्व के जैन धर्म में महत्व, ऋतु परिवर्तन से आने वाले शारीरिक एवं मानसिक बदलावों पर सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने 'त्याग, संवर एवं निर्जरा' को अपनाने की प्रेरणा दी।

बेंगलुरु

गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में विशेष कार्यक्रम 'होली के रंग, अध्यात्म के संग' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रंगों के साथ ध्यान और मंत्रों का प्रयोग कराया गया। साध्वी संयमलता जी ने श्रावकों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति पर्वों एवं त्योहारों की संस्कृति है। होली का पर्व आनंद और उल्लास का त्योहार है, यह मैत्री, समानता, सामंजस्य और सौहार्द का प्रतीक है। बसंत ऋतु का यह बासंती त्योहार खुशियों का दिन होता है, जो हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। रंग हमारे स्वभाव पर गहरा प्रभाव डालते हैं, इसलिए हमें उनके माध्यम से अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। साध्वी मार्दवश्री जी ने विभिन्न रंगों के प्रभाव और उनके प्रयोग के महत्व को स्पष्ट करते हुए अनुष्ठान का प्रारंभ किया। उन्होंने बताया कि आठ कर्मों के क्षय और क्षयोपशम के लिए बीजाक्षरों तथा रंगों का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक विसंगतियों को दूर करने और मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के लिए विशुद्धि केंद्र पर नीले रंग के ध्यान का अभ्यास कराया गया। साथ ही, शुभ नाम और गोत्र कर्म के पूद्गलों की जागृति के लिए भी प्रयोग किए गए, जिससे व्यक्ति को यश और नाम की प्राप्ति होती है।

तोशाम

तेरापंथ भवन तोशाम में होली उत्सव कार्यक्रम आध्यात्मिक रूप से मनाया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। ज्ञानार्थी भूमि, लक्षित व चेतना ने होली के उत्सव पर अपना वक्तव्य दिया। उपासिका मंजू जैन ने कहा कि होली का उत्सव रंगों का उत्सव है। जिसका मन धर्म में लीन है उसे देवता भी पराजित नहीं कर सकते। ज्ञानार्थी जियांश, देवांश, नैतिक, हिमांश ने होली पर कविता की प्रस्तुति दी। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने ज्ञान केंद्र पर पीले रंग का ध्यान करते हुए 'ऊं णमो णाणस्स' मंत्र का प्रतिदिन 21 बार जप करने की प्रेरणा दी। प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने वर्तमान युग में पानी के महत्व को बताते हुए पानी को व्यर्थ न बहाने की प्रेरणा दी। प्रशिक्षिका बबिता जैन ने होली पर गीत का संगान किया। प्रेक्षावाहिनी संवाहिका मीनू जैन ने नमस्कार महामंत्र पर आधारित रंगों का ध्यान करवाया। ज्ञानशाला के बच्चों के लिए होली की थीम पर एक ड्राइंग प्रतियोगिता करवाई गई एवं आकर्षक बैलून गेम का आयोजन भी करवाया गया जिसमें मुख्य भूमिका नैन्सी जैन की रही। प्रतियोगिता में विशेष स्थान प्राप्त करने वालों को त्याग के द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनें, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं एवं ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही।

कृष्णगिरी

भारतीय त्योहारों की परम्परा में होली का त्योहार अपनी विशिष्ट पहचान लिए हुए है। यह त्योहार रंगों की रागिनी के साथ मानव जाति को विकृति से संस्कृति की ओर गतिमान होने की प्रेरणा प्रदान करता है। इस त्यौहार का आगमन प्रकृति के मिलन में उल्लास और उमंग भरे वातावरण का निर्माण करता है। उपरोक्त विचार युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि मोहजीतकुमारजी ने तमिलनाडु के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र कृष्णगिरी में होली चातुर्मास के समारोह में प्रकट किये। मुनिश्री ने होली के सांस्कृतिक महत्व को प्रकट करते हुए कहा कि होली का त्योहार प्रेम, स्नेह, सौहार्द और सद्भावों के साथ जुड़ा हुआ है। होली की रंगीन छटा व्यक्ति के मन और भावों में आनन्द प्रकट करती है। तनाव और अवसाद के युग में व्यक्ति के भीतर आनन्द की रंगीन बहार बहे। कार्यक्रम में मुनिश्री ने रंगों का ध्यान करवाया। दुनिया के प्रत्येक दिन को त्योहार की अभिधा से अभिहित करते हुए मुनि जयेशकुमारजी ने आध्यात्मिक और व्यावहारिक धरातल पर हर रंग की महत्ता को वैज्ञानिक तथ्यों के माध्यम से प्रकट किया। इस अवसर पर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि निर्भयरत्नविजय जी ने भी अपने विचार प्रकट किए।

राजाराजेश्वरी नगर

साध्वी पावनप्रभाजी ने होली उत्सव पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा - होली एक लौकिक पर्व माना जाता है, यह पर्व चतुर्दशी व पक्खी के साथ जुड़कर अध्यात्ममय बन जाता है। जैसे वस्त्रों के दाग व धब्बों को धोने के लिए रिमूवर, आला, ब्लीच आता है वैसे ही आत्मा के दोषों को, धब्बों को मिटाने का रिमूवर है प्रतिक्रमण। इस आध्यात्मिक अनुष्ठान के द्वारा हम खमतखामणा करके सब जीवों के साथ मैत्रीभाव रख सकते हैं, मैत्री का दीप जला सकते हैं। साध्वी आत्मयशाजी, साध्वी उन्नतयशाजी व साध्वी रम्यप्रभाजी ने 'होली का त्यौहार - रंगों का उपहार' सम्बन्ध में परिसंवाद की प्रस्तुति से रंगों के महत्व को प्रकट किया। पंच परमेष्ठी के पाँच रंगों से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को आध्यात्मिक होली खिलाई। शासनमाता की स्मृति में साध्वीवृन्द के द्वारा सामूहिक सुमधुर गीत का संगान किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

स्मृति सभा का हुआ आयोजन

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कुमलकुमारजी, मुनि श्रेयांस कुमारजी, केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञाजी, साध्वी लब्धियशाजी, साध्वी ललितकलाजी के सान्निध्य में 'शासनश्री' साध्वी ज्योतिश्रीजी की स्मृति सभा गंगाशहर सेवा केन्द्र शान्तिनिकेतन में रखी गई।

मुनि कमलकुमारजी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- जो सदा तप, जप, ध्यान, स्वाध्याय में लीन रहता है वह अपने आप में लीन रहता है। जो अपने में लीन रहता है उसके कर्म क्षीण होते हैं। उन्होंने कहा कि साध्वी ज्योतिश्री जी ने अध्यात्म की ज्योति जलाकर अपना पथ प्रकाशित कर दिया। मुनिश्री ने साध्वीश्री की स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान करवाकर सादर श्रद्धांजलि अर्पित की। केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञाजी ने कहा - संत वह होता है जो शांत होता है। जो शांत होता है उनके चारों गतियों का अंत होता है।

साध्वी ज्योतिश्रीजी ने उपशम कषायी होकर संसार भ्रमण को सीमित कर लिया। साध्वी ललितकलाजी जी ने कहा- हीरा कहीं भी रहे उसकी कीमत घटती नहीं है। संत जहां भी रहे, जहां भी जाए, सबका भला होता हो। साध्वी लब्धियशाजी ने कहा कि साध्वी ज्योतिश्रीजी के बाहरी सौंदर्य के साथ-साथ आन्तरिक सौन्दर्य भी अनुपम था। सहज, सरलता, अनासक्ति, निर्लिप्तता, शांत सहवास, मृदु भाषी, स्मित वदन उनकी पहचान थी। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी कुन्थुश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी प्रांजलप्रभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन साध्वी सुमंगलाश्रीजी व गीत का संगान पवन छाजेड़ ने किया।

साध्वी मृदुलाजी, साध्वी ध्रुवरेखाजी व समणी चैतन्य प्रज्ञाजी ने अपने विचार रखे। साध्वी वृंद ने समूह गीतिका की सुन्दर प्रस्तुति दी। इसी क्रम में तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लूणकरण छाजेड़, महासभा के कार्यकारिणी सदस्य भैंरूदान सेठिया, तेरापंथी सभा के मंत्री जतनलाल संचेती, तेयुप के उपाध्यक्ष ललित राखेचा, परिवार की तरफ से उपासक इंदरचंद बैद ने श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन मीनाक्षी आंचलिया ने किया।

आनंद, शक्ति और शांति प्रदान करने वाला है पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान

विरार।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन विरार में हुआ। प्रथम बार समायोजित इस अनुष्ठान में श्रावक समाज ने उत्साह के साथ भाग लिया। साध्वी प्रोफ़ेसर मंगलप्रज्ञाजी ने संभागी अनुष्ठानकर्ताओं को उद्बोधन देते हुए कहा - पैंसठिया छंद एवं यंत्र की साधना प्रभावशाली है, आनंद, शक्ति और शांति प्रदान करने वाली है। हर व्यक्ति को शक्ति काम्य है, जैन शासन को विरासत के रूप में अनगिनत मंत्र प्राप्त हुए हैं। अनेक साधकों ने साधना की है और अनुभूत आनंद रस को जन समुदाय को बांटा है। पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान विघ्न शामक अनुष्ठान है। व्यक्ति जीवन जीता है, अच्छे लक्ष्य की ओर बढ़ता है, अनेक शारीरिक, मानसिक समस्याएं आती रहती हैं। जिसके कारण वह हताश निराश हो जाता है पर मंत्र साधना जीवन पथ के अवरोधों को दूर करने वाली है। गहन आस्था के साथ सविधि द्वारा किया गया हर प्रयोग वरदायी होता है। साध्वी वृन्द ने सामूहिक संगान किया। सभाध्यक्ष अजयराज फूलफगर ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। विरार सभा द्वारा वर्षीतप साधना रत विरार से अंजना रमेश सोलंकी एवं वसई से रेखा राजेंद्र गुंदेचा का सम्मान किया गया। सभा के निवर्तमान अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। साध्वीवृंद ने वर्षीतप अनुमोदन गीत का संगान किया। महिला मंडल एवं पारिवारिक जनों ने तप वर्धापन स्वर प्रस्तुत किए।

रैली का आयोजन

भिलोड़ा। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान मे तेरापंथ महिला मंडल भीलोडा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में भव्य रैली का आयोजन किया जिसमें माहेश्वरी, अग्रवाल और गुजराती समाज की 50 बहनों ने भाग लिया। मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका प्रेरणा बाफना ने नमस्कार महामंत्र से की।

भिलोड़ा महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा रेखा भटेवरा ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया। भिलोड़ा महिला पुलिस इंस्पेक्टर एम. एम. मालीवाल ने साइबर फ्रॉड से बचने के उपाय बताए।

माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष डिंपल मूंदड़ा ने नारी सशक्तिकरण पर विचार व्यक्त किये।

बोलती किताब

आभामंडल

स्वभाव का परिवर्तनशील स्वरूप - मनुष्य का चित्त स्थिर नहीं होता, यह समय, परिस्थितियों और स्थान के अनुसार बदलता रहता है। सुबह जो व्यक्ति शांत और सौम्य दिखता है, दोपहर में वह क्रोधित और उत्तेजित नजर आ सकता है। इसी प्रकार, संध्या और रात्रि में भी उसका स्वभाव परिवर्तित हो सकता है। यह बदलाव समुद्र की लहरों की तरह हैं, जो कभी शांत रहती हैं और कभी ज्वार-भाटा के रूप में उफान पर होती हैं।

सकारात्मकता और नकारात्मकता का द्वंद्व - व्यक्ति के भीतर दो प्रवाह चलते रहते हैं—संक्लेश (नकारात्मकता) और असंक्लेश (सकारात्मकता)। जब संक्लेश सक्रिय होता है, तब व्यक्ति बुरे विचारों और कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है, जबकि असंक्लेश के प्रभाव में वह अच्छे विचार और शुभ कर्म करता है। यह बदलाव स्वतः होते हैं, लेकिन व्यक्ति के अपने निर्णय और प्रवृत्तियाँ भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सूक्ष्म जगत का प्रभाव - मनुष्य के विचार और भावनाएँ सूक्ष्म जगत से प्रभावित होती हैं। हमारे चारों ओर अनगिनत परमाणु बिखरे होते हैं, जिनमें भाषा, विचार, भावना और ऊर्जा के तत्व समाहित होते हैं। जैसे-जैसे मनुष्य किसी विचार को ग्रहण करता है, वह उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। लेकिन यह सूक्ष्म जगत इंद्रियों से नहीं देखा जा सकता, इसके अनुभव के लिए गहरी

जागरूकता और आत्मनियंत्रण - व्यक्ति के भीतर मौजूद ऊर्जा का प्रवाह संकल्प और जागरूकता पर निर्भर करता है। यदि वह मूर्छा (अचेतनता) में रहता है, तो संक्लेश सक्रिय हो जाता है और नकारात्मक विचार जन्म लेते हैं। लेकिन यदि वह जागरूकता की चाबी से अपने भीतर के द्वार खोलता है, तो असंक्लेश प्रकट होता है और शुभ विचार एवं कर्म स्वतः प्रकट होने लगत हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

कालांवाली।

तेरापंथ युवक परिषद् कालांवाली, फोर्टिस हॉस्पिटल मोहाली एवं भारत विकास परिषद् द्वारा तेरापंथ भवन में मुफ्त मल्टीस्पेशलिटी मेडिकल जांच कैंप लगाया गया। जिसमें हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ कुलदीप सिंह, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ गगनदीप गुप्ता, सर्जरी विशेषज्ञ डॉ वितिश सिंगला, ब्रेस्ट एवं एंडोक्राइन विशेषज्ञ डॉ दीप्ति सिंह ने अपनी सेवाएं दी।

इस कैंप के प्रोजेक्ट चेयरमैन एडवोकेट अरुण गर्ग ने बताया कि तेरापंथ भवन में आयोजित इस शिविर में हड्डियों में कैल्शियम की जांच, ईसीजी, शुगर, ब्लड प्रेशर आदि टेस्ट किए गए। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कमलेश गर्ग हांसी व मोहन लाल बंसल थे।

शिविर में बड़ी संख्या में भाविप व तेयुप सदस्यों ने अपनी सेवाएं दी। इस कैंप में लगभग 210 मरीजों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई।

साथ ही श्री तुलसी महाप्रज्ञ होम्योपैथिक हॉस्पिटल द्वारा मरीजों की जांच कर मुफ्त दवाई भी दी गई।

पृष्ठ 11 का शेष

सुकुमारता को छोड़कर...

सहन करो, सुखी बनो। श्रम करो, सफल बनो, सुखी बनो। व्यक्ति अवांछनीय कामनाओं को काम करने का प्रयास करे। छोटी चीजों में उलझने से बड़ी चीज प्राप्त नहीं हो सकती। कामना अतिक्रान्त हो जायेगी तो दुःख भी कम हो जायेगा, राग-द्वेष को छोड़ दे तो व्यक्ति संसार में सुखी रह सकता है। व्यक्ति कठोरता, श्रम और सेवा से अपने जीवन को सुखी बनाए। अपने प्रांगण में पूज्यप्रवर के स्वागत में राधाभाई अहीर ने उद्गार व्यक्त किये।

पृष्ठ 1 का शेष

स्वयं एवं दूसरों का...

किसी का लोकोत्तर उपकार करें, आध्यात्मिक उपकार करें, किसी को समझाकर सम्यक्त्वी बनाएं। साधु का जीवन लोकोत्तर दया का साकार रूप हो सकता है। उनके व्याख्यान के माध्यम से त्याग भी संभव हो सकता है। श्रावक भी लोकोत्तर उपकार कर सकता है। अहिंसा के परिवार से जुड़ें रहें, स्वयं अहिंसा के मार्ग पर चलें और दूसरों को भी उस मार्ग पर चलाने का प्रयास करें। धर्म-ध्यान की साधना जीवन में सतत चलती रहनी चाहिए। पूज्यवर के स्वागत में बागड़ सर्वोदय ट्रस्ट के ट्रस्टी मोतीलालभाई नंदु तथा खारोई प्राथमिक शाला से मुकेशभाई चावड़ा ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मोक्ष की प्राप्ति हो हमारा उत्कृष्ट लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
19 मार्च, 2025

भैक्षवगण सम्राट आचार्यश्री महाश्रमणजी गांधीधाम के रिवेरा एलीगेंस परिसर में पधारे। अमृत देशना में पूज्यवर ने ₹सम्यक्त्व₹ शब्द की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि यह शब्द विशेष रूप से जैन दर्शन में प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ होता है यथार्थ और सही। आचार्य प्रवर ने कहा कि व्यक्ति का ज्ञान सम्यक् हो, दर्शन और श्रद्धा सम्यक् हो तथा आचरण भी सम्यक् हो, तभी वह मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

धार्मिक जगत में मोक्ष को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है और यदि अध्यात्म की साधना का कोई परम लक्ष्य है, तो वह केवल मोक्ष ही है। मोक्ष की प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति को और कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती। जीवन चक्र निरंतर चलता रहता है, व्यक्ति आता है और चला जाता है, किंतु जीवन का वास्तविक उद्देश्य यह होना चाहिए कि पूर्व जन्मों के कर्मों का क्षय किया जाए, आत्मा को निर्मल बनाया जाए और मोक्ष की दिशा में निरंतर आगे बढ़ा जाए। यही हमारा उत्कृष्ट लक्ष्य और साध्य होना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि यदि गंतव्य तय हो, गंतव्य की चाह हो और उस दिशा में गति हो, तो मार्ग अपने आप मिल जाता है। यदि मोक्ष को हमने अपना गंतव्य बनाया है और हम स्वयं उसकी ओर बढ़ रहे हैं, तो सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और तप हमारे मार्गदर्शक बन सकते हैं। इनकी साधना से मोक्ष की गति संभव हो जाती है। मानव जीवन को दुर्लभ बताया गया है। जिस प्रकार किसी राजा के तीन प्रमुख कर्तव्य होते हैं—सज्जनों की रक्षा करना, दुर्जनों को दंडित करना और प्रजा का भरण-पोषण करना—उसी प्रकार हमें भी अपने दुर्लभ मनुष्य जन्म का यथासंभव सदुपयोग करना चाहिए। आत्मा अमर है और वह निरंतर नए-नए जन्म धारण करती रहती है, अतः हमें धर्म की साधना में समय देना चाहिए ताकि हम मोक्ष की दिशा में अग्रसर हो सकें। यदि हमारा आचरण शुद्ध होगा, तो आगे का मार्ग स्वतः प्रशस्त हो जाएगा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि भारतीय साहित्य में चिंतामणि रत्न, कामधेनु और कल्पवृक्ष को दुर्लभ माना गया है, उसी प्रकार मनुष्य जन्म भी अत्यंत दुर्लभ है। चारों गतियों में केवल मनुष्य योनि ही ऐसी है, जिसमें व्यक्ति अपनी अंतर्निहित शक्तियों का विकास कर अपनी मंजिल तक पहुंच सकता है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मनुष्य जन्म में एक उत्तम गुरु का मिलना भी अत्यंत दुर्लभ होता है। गुरु का स्थान परमात्मा से भी ऊपर होता है क्योंकि वही जीवन की दिशा तय करता है। सच्चे गुरु के मार्गदर्शन से जीवन की राह सुंदर और सकारात्मक बन जाती है।

पूज्यवर के स्वागत में राजवी ग्रुप से कंचन सालेचा, महावीर सालेचा, रेखा चौपड़ा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। निशी, तेजस्वी संकलेचा ने अपनी प्रस्तुति दी।

रिवेरा ग्रुप की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। रिवेरा सोसायटी परिवार की ओर से मुकेश आचार्य एवं गुजरात की पूर्व विधानसभा अध्यक्ष निमाबेन आचार्य ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी द्वारा किया गया।

सुकुमारता को छोड़कर करें श्रम और सेवा : आचार्यश्री महाश्रमण

कुंजीसर।
23 मार्च, 2025

महामनस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 11 किमी का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ कुंजीसर पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि सुखी बनने के संदर्भ में कुछ सूत्र शास्त्र में बताये गये हैं। सुख व्यक्ति को इष्ट होता है और सुख पाने के लिए आदमी प्रयास भी करता है। शास्त्राकार ने सुखी बनने के संदर्भ में एक आध्यात्मिक समूह बताया है। पहली बात बताई है कि अपने आप को तपाओ - सुकुमारता को छोड़ो। कठोर जीवन जीने का प्रयास करो। कठोरता का अभ्यास नहीं है, सुविधावादी मनोवृति अवांछित स्तर पर है तो व्यक्ति दुःखी बन सकता है। व्यक्ति सर्दी, गर्मी और वर्षा को सहन करने का प्रयास करे। चारित्रात्माएं चलते हैं, यह भी कठोरता है, एक प्रकार की तपस्या हो जाती है। गर्मी में प्यास को सह लेना भी एक तपस्या है। वर्षा की अपनी समस्या हो सकती है। ठिठुरती सर्दी में भी चारित्र आत्माएं विहार कर देते हैं। यह भी एक कठोरता है। हर ऋतु का अपना महत्व है। हमें समता में रहते हुए कठोर स्थिति का भी सामना करना चाहिये। बड़ों की डांट को भी शांति से झेलना चाहिये। इससे भी कठोरता का अभ्यास हो जाता है। गुरु कड़ाई से कहकर अच्छी शिक्षा दे रहे हैं तो उसे भी समता से सहना चाहिये। शारीरिक कठिनाई और मानसिक कठिनाई को शांति से सहना चाहिये। (शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 मार्च - 06 अप्रैल, 2025

बहुश्रुत की उपासना से बदल सकती है जीवन की दशा और दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।
18 मार्च, 2025

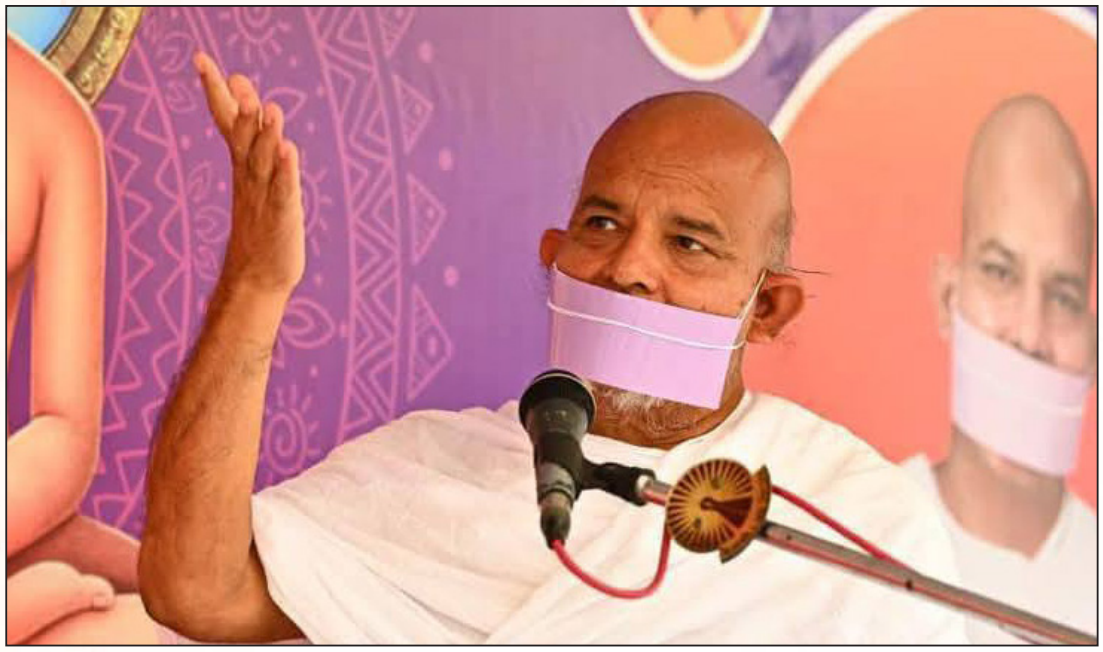

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी गांधीधाम के अमर पंचवटी क्षेत्र में 13 दिवसीय प्रवास संपन्न कर अष्टमंगल कॉलोनी में स्थित राजूभाई मेहता परिवार के निवास स्थान में पधारे। अष्टमंगल समवसरण में परम पूज्य ने अपने अमृत वचनों में फरमाया - शास्त्र में बताया गया है कि इहलोक और परलोक का हित हो और जिससे सुगति की प्राप्ति हो सके, उसके लिए श्रमण धर्म स्वीकार करना चाहिए। श्रमण धर्म को स्वीकार करने के लिए पहले उसकी अच्छी जानकारी हो, उसके प्रति श्रद्धा हो। इसलिए व्यक्ति को बहुश्रुत की उपासना और पर्युपासना करनी चाहिए और उनसे अर्थ का विनिश्चय करना चाहिए।

साधु और ज्ञानी के संपर्क में रहने से धर्म और जीवन की सही समझ विकसित होती है। सम्यक ज्ञान प्राप्त कर यदि चारित्र का विकास किया जाए, तो व्यक्ति बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। ज्ञान केवल पुस्तकीय न होकर अनुभव और तत्वबोध से जुड़ा होना चाहिए।

आचार्यश्री ने अपने बचपन के अनुभव साझा करते हुए कहा - 'मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) और मुनिश्री सोहनलालजी (चाड़वास) उच्च कोटि के तत्वज्ञ संत थे। मुझे उनके सान्निध्य में ज्ञान और तत्वबोध प्राप्त करने का अवसर मिला। तेरापंथ धर्मसंघ के दान और दया के सिद्धांतों की गहराई को समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री सुमेरमलजी के सत्संग से मेरा वैराग्य पुष्ट हुआ और मैंने दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प लिया।'

आचार्य श्री ने आगे फरमाया कि गृहस्थ भी ज्ञानी हो सकते हैं और प्रवचन के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। प्रवचन केवल ज्ञान की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन में सही दिशा देने वाला होना चाहिए। आचार्यश्री भिक्षु उदाहरणों के माध्यम से ज्ञान को सरल और प्रभावी रूप में प्रस्तुत करते थे। बहुश्रुत की उपासना से जीवन की दशा और दिशा बदल सकती है, जिससे व्यक्ति श्रामण्य (संयम) की ओर अग्रसर हो सकता है।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के पश्चात साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आचार्यवर जहां पधारते हैं, वहां श्रद्धालुओं की भीड़ स्वतः एकत्रित हो जाती है। जैसे जहां राम होते हैं, वहां अयोध्या का निर्माण हो जाता है, वैसे ही तेरापंथ के आचार्य जहां होते हैं, वहां भक्तिभाव का संचार हो जाता है। पूज्यवर के दर्शन से पापों का क्षय होता है और पुण्यों का संचय बढ़ता है।

अष्टमंगल क्षेत्र की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा-गांधीधाम के मंत्री राजूभाई मेहता, तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष मुकेश भंसाली, उपासक पारसमल बाफना, कसक मेहता, अशोक संघवी, माणकचंद बाफना, प्रवीण बाफना, ईशानी डोशी आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने प्रेक्षाध्यान के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

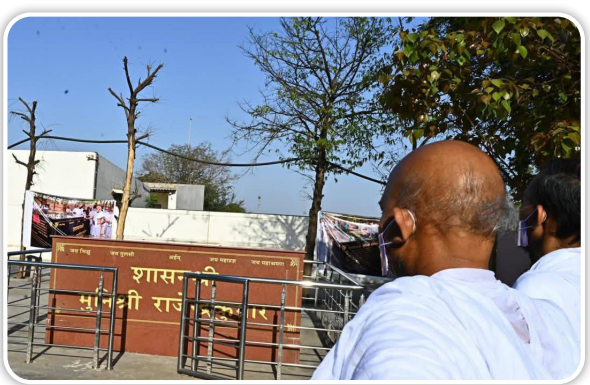

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।